इस्तिफ़ता

(फ़त्वा माँगना)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

Istifta
(in Hindi)

by

Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani[as]
The Promised Messiah and Imam Mahdi

وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ○

(अलबक़र: 284)

तुम गवाही को मत छुपाओ और जो उसे छुपाता है उसका दिल गुनहगार है और जो काम तुम करते हो अल्लाह तआला जानता है।

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

16 मई 1897 ई०

नाम पुस्तक	: इस्तिफ़्ता
Name of book	: Istifta
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih & Mahdi Alaihissalam
अनुवादक	: डॉ अन्सार अहमद, एम.ए.एम.फ़िल, पी एच. डी., पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, M.A, M. phil, Ph. D, P.G.D.T, Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग	: अमतुल करीम नय्यरा
Typing Setting	: Amtul Kareem Nayyara
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-wa-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

इस्तिफ्ता

यह पुस्तक 12 मई 1897 ई० को लिखी गई इसके लिखने का उद्देश्य आर्य क़ौम के झूठे आरोप लगाने का उत्तर देना था कि लेखराम नऊज़ुबिल्लाह आपके षड्यंत्र से क़त्ल हुआ है। इस पुस्तक में लेखराम से संबंधित भविष्यवाणी पर विस्तार पूर्वक बहस की गई है तथा इस भविष्यवाणी के समस्त पहलुओं पर प्रकाश डाल कर विद्वानों और समीक्षकों से मांग की गई है कि वे इल्हामों को पढ़कर गवाही दें कि जो भविष्यवाणी लेखराम की मृत्यु के बारे में की गई थी वह वास्तविक तौर पर पूरी हुई या नहीं।

इस पुस्तक के पढ़ने से प्रत्येक न्यायप्रिय इन्सान को यह निश्चित तौर पर ज्ञान हो जाता है कि वास्तव में ख़ुदा तआला मौजूद है और वह समय से पूर्व अपने विशेष बन्दों पर परोक्ष (ग़ैब) की बातें प्रकट किया करता है।

You should not conceal your testimony, and he who does conseal is surely wicked minded; and God is perfectly aware of what you do.- (Sura Baqar R. 38)

Sir,

I beg to enclose herewith a copy of the pamphlet named ''Istifta' '. The motive which has led me to write it is, that the Aryas entertain quite a false notion that Lekh Ram was murdered at my instigation. I am inclined to excuse them for this, as they are entirely ingorant of the supernatural origin of prophecies, and according to their belief inspiration and revelation from God belonged only to the hoary antiquity, now they have become extinct, in other words the divine influence is not eternal, but a thing of the past. Therefore they cannot reconcile the prophetic phenomena with the present age. However a study of the pamphlet, it is hoped, will not only clear me of any participation direct or indirect in Lekh Ram's murder, but will also be useful to those who deny the existance of prophetic revelation in this age, and who consider the power of telling future events inconsistent with the laws of Nature. At any rate this pamphlet will probably be interesting and instructive to those who sicncerely seek a reply to the questions:-(1) ''Is there a God at all''? (2) ''If so, does He reveal future events to His Elite.''? I have answere those questions by fully explaining such reasons as conclusively prove that tha prophecy about the Lekh Ram was actually revealed by God, and that it was altogether out of the Province of

man's capabilities and device.

I have repeatedly said that Lekh Ram had challenged me to make the prophecy concerning himself which if it were fulfilled was to be the sole criterion of the truth or falsehood of Islam and the Arya faith. And when the prophecy was made, both the parties agreed to give it a very wide publication and awaited the result most anxiously. At last is has been most clearly and definitely fulfilled. The most curious phase of the prophecy, which has been very thoroughly discussed in these pages, is, that it was published in clear and unequivocal words in the''BURAHIN-I-AHMADIYYAH'' about seventeen years ago when Lekh Ram was a mere boy of twelve or thirteen years. The readers of this pamphlet, must carefully consider this fact which, I believe, will improve their faculty of discernment, and by cleary shewing them the difference between Divine and human powers, will settle their thoughts and satisfy their minds.

It would not be out of place to invite your attention to another of my books-''SIRAJ-I-MUNIR'' or ''THE BRIGHT SUN,''- which deals with this important question from another point of view. All the prophecies which were made and literally fulfilled before Lekh Ram's death, have been collected therein, and a few of them concerned some other Aryas who are still alive to bear testimony to what they experienced in their own cases. If any of my readers before attemting a reply to this pamphlet should like to see the ''SIRAJ-I-MUNIR'' it

shall be sent to him with great pleasure.

I should also mention that those Maulvies, who like the Aryas, bewildered by the too accurate and unexpected fulfilment of the prophecy, and who being utterly devoid of spirtuality are befogged by doubt, will find it worth their while to persue this book.

I send this pamphlet to you so that after a careful consideration of the arguments I have given, you may give your impartial opinion as to the following points:-

1. Has the prophecy about Lekh Ram been acutally fulfilled?

2. If so can it be said that the prophecy is suprernatural, that is, neither a design of man nor a mere accident, but a special manifestaion of the Divine powers, which may be termed a revealed prophecy?

And communicate the same with your arguments in support of your views to

Your ever faithful,

Kadian: MIRZA GHULAM AHMED

Dated 1st May 1897 Chief of Kadian

Gurdaspur District

Punjab.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ط وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ

(अलबक़र: 284)

अनुवाद- तुम गवाही को मत छुपाओ और जो उसे छुपाता है उसका दिल गुनहगार है और जो काम तुम करते हो अल्लाह तआला जानता है।

जनाब मन! मैं इस चिट्ठी के साथ आपकी सेवा में एक पुस्तक भेजता हूं जिसका नाम **इस्तिफ़्ता** (फ़त्वा माँगना-अनुवादक) है। इस पुस्तक के लिखने की आवश्यकता यह हुई है कि आर्य क़ौम ने सीमा से बढ़कर इस बात पर बल दिया है कि लेखराम इस व्यक्ति अर्थात् इस लेखक के षड्यंत्र से क़त्ल हुआ है और मेरी समझ में वह कुछ असमर्थ भी हैं क्योंकि वे इल्हामी भविष्यवाणियों की विलक्षण पद्धति से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। कारण यह है कि उनकी आस्था के अनुसार हज़ारों वर्ष से ख़ुदा के इल्हाम पर मुहर लग गई है और ख़ुदा का कलाम आगे नहीं अपितु पीछे रह गया है। इसलिए वे किसी प्रकार समझ नहीं सकते कि ख़ुदा की ओर से ऐसी भविष्यवाणियां भी हो सकती हैं। बहरहाल हमारे हाथ में जो अपने बरी होने के कारण है उनका वर्णन कर देना न केवल लेखराम के सहायकों के संदेहों को मिटाना है अपितु ऐसे लोगों की जानकारियों को भी बढ़ाना है जो इस युग में किसी इल्हामी भविष्यवाणी के मूल अर्थ पर भी ऐतराज़ रखते हैं और ग़ैब (परोक्ष) की बातों को समय से पूर्व वर्णन करना प्रकृति के नियम के विरुद्ध समझ रहे हैं। संभवतः यह पुस्तिका उन लोगों के

लिए भी रुचिकर और ज्ञान में वृद्धि का कारण होगी जो हार्दिक रुचि के साथ इस बात की छानबीन में हैं कि क्या ख़ुदा वास्तव में मौजूद है? और क्या वह समय से पूर्व किसी पर ग़ैब की बातें प्रकट कर सकता है? इसी उद्देश्य से इस पुस्तिका में ऐसे समस्त कारण वर्णन किए गए हैं जो भली भांति सिद्ध करते हैं कि वह भविष्यवाणी जो लेखराम के बारे में की गई थी वह निश्चित तौर पर ख़ुदा तआला की ओर से थी और किसी प्रकार संभव ही नहीं कि मनुष्य की योजना हो या मनुष्य उस पर समर्थ हो सके। और इस बात को हम कई बार वर्णन कर चुके हैं कि इस भविष्यवाणी का निवेदन **लेखराम ने स्वयं ही किया था** और उसको इस्लाम तथा आर्य धर्म के सच और झूठ की परीक्षा का मापदंड ठहराया था तत्पश्चात दोनों पक्षों की परस्पर सहमति से दोनों पक्षों ने बड़े ज़ोर से इस भविष्यवाणी को प्रकाशित किया था और जिस प्रकार पहलवानों की कुश्ती होती है इसी प्रकार दोनों गिरोहों का इस भविष्यवाणी पर ध्यान लगा हुआ था। अन्ततः बड़ी सफ़ाई से यह पूरी हुई। इस भविष्यवाणी में यह बात नितांत अद्भुत है जिसको मैंने शक्तिशाली तर्कों के साथ इस पुस्तिका में वर्णन कर दिया है और वह यह है कि यह भविष्यवाणी मार्च 1897 ई० के महीने से जिसमें लेखराम क़त्ल हुआ है 17 वर्ष पूर्व हमारी पुस्तक बराहीन अहमदिया के एक इल्हाम में बड़ी सफ़ाई से वर्णन की गई है और बराहीन के लिखने का वह युग था कि शायद उस समय लेखराम 12-13 वर्ष का होगा। यही वह विषय है जिसे बड़े ध्यानपूर्वक सोचना चाहिए और यही वह विषय है जिससे आध्यात्म ज्ञान की उन्नति होगी और ख़ुदा के कार्य तथा मनुष्य के

कार्य में खुला-खुला अन्तर दिखाई देगा और हृदय में सांत्वना और संतुष्टि पैदा हो जाएगी और संभवत: यहां इस बात का वर्णन करना भी लाभप्रद होगा कि अभी मैंने अपनी एक अन्य पुस्तक में जिसका नाम 'सिराजे मुनीर' है अपने बरी होने और सच्चाई सिद्ध करने के लिए एक और सिलसिला गवाह की तरह प्रस्तुत किया है, और वह यह है कि मैंने वह समस्त भविष्यवाणियां जो लेखराम की मृत्यु से पूर्व पूरी हो चुकी थीं कथित पुस्तक में एकत्र करके लिख दी हैं और उनकी व्यवस्था बहुत उत्तम रंग में दिखाई है। उन भविष्यवाणियों के कुछ ऐसे आर्य भी गवाह हैं जिनके बारे में यह भविष्यवाणियां की गई थीं। इसलिए मेरे नज़दीक यह अच्छा होगा कि जो सज्जन अपनी राय लिखते समय 'सिराजे मुनीर' का देखना उचित समझें वे मुझसे मांगे। मैं वह पुस्तक उनकी सेवा में भेज दूंगा और यह बात भी वर्णन करने योग्य है कि जैसा कि आर्यों की उस भविष्यवाणी के बारे में अकारण संदेह है जिनके कारण इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि भविष्यवाणियों की प्रतिष्ठा ने उन्हें आश्चर्य में डाल दिया है ऐसा ही हमारे विरोधी मौलवी भी जो रूहानियत से वंचित हैं किसी भवन में पड़े हुए हैं तो उनके लिए भी यह पुस्तक लाभप्रद होगी बशर्ते कि वे ध्यानपूर्वक पढ़ें और यह पुस्तक इस पत्र के द्वारा आपकी सेवा में प्रस्तुत की जाती है कि आप पुस्तक के प्रस्तुत कारणों पर विचार करके अपने हार्दिक न्याय की मांग से वह फ़त्वा लिखें जिसका लिखना प्रस्तुत कारणों की दृष्टि से उचित हो। अर्थात् यह कि लेखराम के मरने के बारे में भविष्यवाणी की गई थी क्या वह वास्तव में पूरी हो गई या नहीं? और क्या वह इस उच्च कोटि की विलक्षणता पर है या नहीं जिसके

बारे में ठोस तौर पर कह सकते हैं कि न वह मानवीय योजना है और न संयोग की बात है अपितु ख़ुदा तआला का वह विशेष कार्य है जिसको इल्हामी भविष्यवाणी कहना चाहिए।

السلام علی من اتبع الهدی

लेखक: ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

8 ज़िलहज्ज: 1314 हिजरी

नोट:- पुनः यह कि जो सज्जन लेखराम की भविष्यवाणी के निशान पर सत्यापन के उद्देश्य से अपनी गवाही संलग्न नक्शे पर करना न चाहें उन पर अनिवार्य होगा कि यह पुस्तक इस्तिफ्ता अपने पत्र के साथ वापस करें।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

इस्तिफ्ता

क्या फरमाते हैं समीक्षक लोग और विद्वान लोग कि यह इल्हामी गवाहियां जो नीचे लिखी जाती हैं उन पर दृष्टि डालने से उन पर संतोषजनक परिणाम यह निकलता है या नहीं कि जो भविष्यवाणी लेखराम की मृत्यु के बारे में की गई थी वह निश्चित तौर पर पूरी हो गई। यदि उनकी राय में पूर्ण विश्वास और संतुष्टि के साथ निम्नलिखित भविष्यवाणियों से बतौर दस्तावेज़ साक्ष्य हैं पूर्ण स्पष्टता से यह बात सिद्ध होती है कि वे लेख मानवीय अटकलों और योजनाओं से श्रेष्ठतर और विलक्षण हैं तो केवल ख़ुदा के लिए सच्चाई की सहायता के लिए जो जवां मर्दों और बहादुरों तथा ख़ुदा से डरने वालों का काम है सत्यापन के लिए इस निबंध के नीचे अपनी गवाही अंकित करें। मुझे विश्वास है कि ख़ुदा तआला उनको इस सच्ची गवाही का प्रतिफल देगा और दुनिया तथा दीन (धर्म) की कुशलता और सफलता से पूर्ण भाग प्रदान करेगा अन्यथा सच्ची गवाही छुपाने के जो दुष्परिणाम हैं उनका प्रकटन भी ख़ुदा के कानून के अनुसार अनिवार्य है। परन्तु यदि किसी के नज़दीक निम्नलिखित इल्हामी गवाहियां संतोषजनक नहीं अपितु उनके विचार में वास्तव में मानवीय षड्यंत्र था जो इल्हामी भविष्यवाणी के नाम से प्रसिद्ध किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि अंततः उसी शक्तिशाली षड्यंत्र के कारण लेखराम 6 मार्च 1897

ई० को लाहौर में मारा गया तो उसे अधिकार है कि इस कागज़ पर अपनी गवाही अंकित न करे और मुझे क़ातिलों में समझता रहे। किन्तु यदि उसके नजदीक यह इल्हामी गवाहियां महत्वपूर्ण हैं जिनसे हम लाभ प्राप्त करने के अधिकारी हैं तो धार्मिक सहानुभूति की इस समय हम कोई मांग नहीं करते। परन्तु मानवीय सहानुभूति और वह भी ठीक-ठीक न्याय की दृष्टि से कानून जितना हमें अधिकार देता है उसे हम सभ्यतापूर्वक विद्वान लोगों से बतौर फ़त्वा मांगते हैं हम इस फ़त्वे के माध्यम से समीक्षकों से क्या चाहते हैं? केवल यही कि जो कुछ हम लेखराम की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणियों का एक संपादित एवं पूर्ण सिलसिला उनके सामने रखते हैं। वे उस पर अत्यंत ध्यानपूर्वक फ़त्वे के तौर पर राय लिखें और अपनी पवित्र अन्तरात्मा के जोश से गवाही दें कि क्या बुद्धि और ईमानदारी उचित नहीं ठहराती कि इस इल्हामी सिलसिले के विलक्षण बयान को ख़ुदा तआला की ओर सम्बद्ध किया जाए? और क्या एक बुद्धिमान के मस्तिष्क में आ सकता है कि भविष्यवाणी की यह समस्त शाखाएं जो मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर हैं झूठ के समर्थन में सहसा फूट पड़ें? इस समय यह वर्णन करना आवश्यक है कि आर्य सज्जनों के हाथ में इस भविष्यवाणी को झुठलाने के लिए जो कुछ है वह इससे अधिक नहीं कि उन्होंने बजाए इसके कि ख़ुदा के अद्‌भुत कार्यों पर विचार करते यह तरीका अपनाया है कि कुधारणा के कारण मानवीय षड्यंत्र की संभावना को वह दर्जा दिया है जो सामर्थ्यवान ख़ुदा के कार्यों से विशिष्ट है। चूँकि यह भविष्यवाणी चार वर्ष से कुछ अधिक की थी और कई सभाओं के भाषणों तथा लोगों द्वारा यह बात हिन्दुओं तक

पहुंच गई थी कि भविष्यवाणियों में यह लिखा गया है कि लेखराम के जीवन का अन्त भयावह तौर पर होगा और यह कि ईद के दिनों में उसकी मृत्यु होगी और 6 वर्ष के अन्दर होगी, और भविष्यवाणी अपने स्पष्ट शब्दों में क़त्ल की घटना की ओर संकेत करती थी। इसलिए उन्होंने इस बात को बहुत असंभव समझा कि ख़ुदा तआला की ओर से कोई भविष्यवाणी ऐसे स्पष्ट पतों और निशानों के साथ हो परन्तु इस बात को ज्ञानगम्य न समझा कि समय से पूर्व यह समस्त परोक्ष की बातें कोई इन्सान अपने मुंह से निकाले और फिर वैसी ही पूरी कर के दिखला दे। इसलिए उन्होंने इस इल्हामी भविष्यवाणी को इन्सानी षड्यंत्र पर चरित्रार्थ कर लिया और बड़े आग्रहपूर्वक अखबारों में छपवाया कि ऐसी सफ़ाई से भविष्यवाणी करना और ऐसे खुले-खुले और स्पष्ट तरीके से तिथि, दिन और मृत्यु के रूप को समय से पूर्व वर्णन करना ख़ुदा का कानून नहीं है। अपितु सत्य यह है कि यही व्यक्ति अर्थात् यह लेखक लेखराम का क़ातिल है और भविष्यवाणी गहरे षड्यंत्रों और लम्बे समय के सोचे हुए यत्नों का परिणाम है। इसी आधार पर उन्होंने परस्पर सहमति के साथ इस लेखक को दोषी बनाने के लिए ज़ोर दिया और इस विचार की अभिव्यक्ति में अखबारों के कॉलम के कॉलम काले कर डाले और सरकार में जासूसियां कीं, यहां तक कि 8 अप्रैल 1897 ई० वीरवार के दिन अंग्रेज़ी अफ़सरों ने क़ादियान में आकर मेरे घर की तलाशी ली। तलाशी के समय लेखराम के हस्ताक्षर किए हुए पत्र मिले और वह प्रतिज्ञापत्र भी निकल आया जिसमें आकाशीय निशानों के दिखलाए जाने के बारे में शर्तें क़ायम होकर दोनों सदस्यों की सहमति से सच्ची भविष्यवाणी का सच और

झूठ का मापदंड ठहराया गया था। अतः डिस्ट्रिक्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के सामने वह काग़ज़ पढ़ा गया जिसका निबंध यह था कि जो भविष्यवाणी लेखराम के बारे में की जाएगी वह इस्लाम धर्म और आर्य धर्म में एक अंतिम फ़ैसला होगी। यदि भविष्यवाणी सच्ची निकली तो वह इस्लाम धर्म की सच्चाई की गवाह होगी और हिन्दू धर्म के झूठे होने पर प्रमाण ठहरेगी और यदि झूठी निकली तो वह हिन्दू धर्म की सच्चाई पर गवाह होगी और नऊज़ुबिल्लाह इस्लाम का झूठा होना बताएगी। और यह शर्त पंडित लेखराम ने अपने आग्रह से लिखवाई थी क्योंकि मुझे ख़ुदा तआला के वादों पर विश्वास था। इसलिए मैंने भी इसे स्वीकार कर लिया था अब वह कठिनाई जिसके लिए इस इस्तिफ्ता (फ़त्वा मांगने) की आवश्यकता पड़ी केवल इतना ही नहीं कि आर्य लोगों ने इस लेखक पर गुप्त षड्यंत्र का आरोप लगाया अपितु हमारी क़ौम के कुछ महान लोगों ने भी उनसे सहमति कर ली और यह चाहा कि ऐसी महान भविष्यवाणी जिसके झुठलाने का परिणाम प्रतिज्ञापत्र (मुआहदः) के काग़ज़ों के अनुसार इस्लाम का झूठलाना है किसी प्रकार झूठी ठहराई जाए। अतः मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः और इसी प्रकार अन्य कुछ मौलवियों ने सार्वजनिक तौर पर यह राय प्रकाशित कर दी है कि यह भविष्यवाणी झूठी निकली तो उन्होंने एक पत्र मेरी ओर भी भेज दिया जिसमें उन्होंने लिखा था कि मैंने अपनी नेक नीयत के साथ यह फ़ैसला किया है कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई अर्थात् लेखराम की मृत्यु केवल संयोग की बात थी जिसमें ख़ुदा का कुछ हस्तक्षेप नहीं। और इस बात पर बल दिया कि यह बात प्रमाणित क्यों मान ली जाए

कि भविष्यवाणी सच हुई और क्यों यह स्वीकार न किया जाए कि यह एक संयोग की मृत्यु है जो भविष्यवाणी के समय में घटित हो गई।

इस झुठलाने की हमें अपने व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए तो कुछ परवाह न थी परन्तु चूंकि प्रतिज्ञापत्र के काग़ज़ तलाशी के समय में पकड़े गए और डिस्ट्रिक्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के सामने पढ़े गए और प्रत्येक दुश्मन और दोस्त को सूचना हो गई। तो अब ऐसी सच्चाई जिस में कमी करने से इस्लाम पर अनुचित प्रहार होता है अक्षम्य नहीं। इसी अत्यावश्यकता के कारण यह समस्त वृतांत विद्वानों की सेवा में प्रस्तुत करना पड़ा ताकि वह देखें कि कितने अत्याचार का इरादा किया गया है अफ़सोस कि इन लोगों ने इन विचारों को व्यक्त करते समय यह नहीं सोचा कि इन तावीलों (असल अर्थों से हटकर अर्थ करना) से दुनिया में किसी नबी की भविष्यवाणी स्थापित नहीं रहेगी। क्योंकि प्रत्येक स्थान पर इस भ्रम का दरवाज़ा खुला है कि यह संयोगात्मक घटना है। अतः यदि यही राय सच्ची है तो इन्हें इक़रार करना चाहिए कि समस्त नबियों की नुबुव्वत पर कोई भी सबूत नहीं और सब संयोगात्मक घटनाएं हैं।

तौरात और क़ुर्आन ने नुबुव्वत का बड़ा सबूत केवल भविष्यवाणी को बताया है और एक उपद्रवी व्यक्ति किसी सच्ची भविष्यवाणी को बड़ी सरलता से संयोग की बात कह सकता है परन्तु मैं बल दे कर कहता हूं कि यह सब सन्देह इस प्रकार के हैं कि जैसे कि एक नास्तिक कारीगरियों को एक बेकार सिलसिला ठहरा कर ख़ुदा तआला के अस्तित्व के बारे में सन्देह पैदा कर लेता है और दुनिया की संपूर्ण व्यवस्था को संयोग की बात ठहराता है और फिर जब समझ आती

है और ख़ुदा की कृपा उसके साथ होती है और इस संसार के उत्तम और सुदृढ़ काम को देखता है और ख़ुदा तआला की कारीगरी की बारीकियों और उसकी उत्तम हिकमतों से अवगत होता है तो विवश होकर उसे पहली राय छोड़नी पड़ती है इसलिए निस्संदेह समझना चाहिए कि ये आरोप भी ऐसे ही हैं और ये आरोप उसी समय तक हृदय में उठते हैं कि जब तक एक भविष्यवाणी के बारीक पहलुओं पर नज़र नहीं पड़ती और ख़ुदा तआला की ख़ुदाई की वयवस्था को अपूर्ण समझा जाता है। असल बात यह है कि ऐसे संदेह हमेशा उन लोगों के हृदयों में पैदा होते हैं जिनके हृदय ख़ुदा के आध्यात्मिक ज्ञान (सच्ची मारिफ़त) से वंचित हैं। वे ख़ुदा के कार्यों से आश्चर्य चकित होकर इन्कार करने की ओर झुक जाते हैं और घटनाओं को उस पहलू की ओर खींच लेते हैं जिस पहलू तक उनके मोटे और सतही विचार ठहर गए हैं और उसी पर वे बल देते रहते हैं। हम उनसे पूछते हैं कि यदि लेखराम संयोग से क़त्ल के द्वारा मर गया तो इस प्रकार से भी तो संयोगात्मक बात का घटित होना संभव था कि कोई व्यक्ति उसके बारे में क़त्ल का इरादा न करता या यदि करता तो अपने इरादे में असफल रहता या यदि किसी सीमा तक आक्रमण करता तो संभव था कि इस से मृत्यु तक नौबत न पहुँचती फिर क्या कारण कि अन्य पहलुओं के समस्त संभव संयोग प्रकटन में न आते और यह संयोग जो उन पहलुओं के बारे में अपने साथ कठिनाइयां भी रखता था प्रकटन में आ गया। क्या यह ख़ुदा ने किया या किसी अन्य ने? तो वह सर्वज्ञ और बहुत सुनने वाला ख़ुदा जिसके इन्साफ़ पर दोनों सदस्यों ने इस मुक़द्दमे को छोड़ा था और जिस के संबंध

में एक सदस्य ने ख़बर भी दी थी कि उसने मुझ पर प्रकट किया है कि मैं ऐसा ही करूंगा। उसके बारे में ऐसा गुमान क्यों किया जाए कि उसने न्यायपूर्ण फ़ैसला नहीं किया और क्यों ऐसा समझा जाए कि उसने मुफ़्तरी की सहायता की। यदि यह मान लिया जाए कि ख़ुदा की यह भी आदत है कि वह ऐसे झूठे की भविष्यवाणियां भी सच्ची कर देता है जिन भविष्यवाणियों को वह अपनी सच्चाई के सबूत का कारण ठहराता है तो जैसे ख़ुदा का जान बूझ कर यह इरादा है के झूठों को सच्चों के साथ बराबर करके सच के सम्पूर्ण सिलसिले को नष्ट और अस्त-व्यस्त कर दे। यदि यह सही है कि ख़ुदा सच्चे का सहायक होता है और अपने वादों को पूरा करता है न कि इफ़्तिराओं को। तो इस सिद्धांत को मानना एक न्यायाधीश के लिए आवश्यक होगा आपकि जो भविष्यवाणी ख़ुदा के नाम पर की जाए और वह पूरी हो जाए तो वह ख़ुदा की ओर से है। और यदि इस सिद्धांत को न माना जाए तो ख़ुदा की समस्त किताबें प्रमाणहीन रह जाएंगी और उनकी सच्चाई पर विश्वास करने के समस्त मार्ग बंद हो जाएंगे। इसी की ओर ख़ुदा तआला संकेत करता है और कहता है

وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ (29 – अलमोमिन)

अर्थात् सच्चे की यह निशानी है कि उसकी कुछ भविष्यवाणियां पूरी हो जाती हैं। कुछ की शर्त इसलिए लगा दी कि अज़ाब के बाद की भविष्यवाणियों में रुजू और तौबः की हालत में अज़ाब का विलंब वैध है। यद्यपि कोई भी शर्त न हो तो संभव है अज़ाब की भविष्यवाणियां स्थगित रखी जाएं और अपनी मीआद के अन्दर पूरी न हों जैसा कि यूनुस की क़ौम के लिए हुआ। अतः ख़ुदा के नाम पर जो भविष्यवाणी

पूरी हो जाए उसके बारे में संदेह करना और उसे संयोग पर चरितार्थ कर देना जैसे ख़ुदा तआला की धार्मिक व्यवस्था पर एक आक्रमण है और नुबुव्वत की संपूर्ण इमारत को धवस्त करने का इरादा है।

इन प्रस्तावना संबंधी बातों को यहां तक लिखकर अब हम उन इल्हमी साक्ष्यों को क्रमश: प्रस्तुत करते हैं जिनका मालूम करना फ़त्वा देने से पूर्व अहम और आवश्यक है, और उन साक्ष्यों पर जो जिरह के प्रश्न हो सकते थे हमने पहले से तथाकथित उपरोक्त वर्णनों में उनका खंडन कर दिया है और शायद भविष्य में भी कुछ लिखा जाए।

अब हम प्रस्तावना संबंधी बातों को यहां तक लिखकर सर्वप्रथम पंडित लेखराम के उन पत्रों तथा अहदनाम: के ख़ुलासे को उत्तर सहित स्वयं दर्ज करते हैं जो इस भविष्यवाणी से पहले पारस्परिक पत्राचार के तौर पर प्रकटन में आए। और वे ये हैं:-

लेखराम की ओर से पत्र

सेवा में आदरणीय मिर्ज़ा साहिब! नमस्ते

जब से मैं यहां क़ादियान में आया हूं बहुत सा पारस्परिक पत्राचार हो चुका है, कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। अब क्योंकि मुझे सच्चाई को घोषित करने के विचार से कोई उत्तम फ़ैसला करना आवश्यक है इसलिए सेवा में कष्ट देता हूं कि आज दिन को कोई समय निर्धारित करके आप मदरसे में पधारें या कोई अन्य स्थान अपने स्वयं के घर के अतिरिक्त निर्धारित करके सूचित करें ताकि बंदा भाई किशन सिंह, हकीम दयाराम और पंडित निहालचंद जी के साथ उपस्थित होकर आसमानी निशानों, इल्हामों और बहस के बारे में आप से कुछ फ़ैसला कर ले। अन्यथा आप भलीभांति स्मरण रखें

कि अब मेरी ओर से समझाने का प्रयास पूर्ण हो गया सच्चाई के मामले से मुंह चुराना बुद्धिमानों से असंभव है।

अधिक नियाज़

सत्याभिलाषी - लेखराम

5 दिसंबर 1885 ई०

पंडित लेखराम का दूसरा पत्र

कृपा कीजिए जनाब मिर्ज़ा साहिब! नमस्ते

भाई किशन सिंह का संक्षिप्त मौखिक और मौलवी दीन मुहम्मद तथा मुहम्मद उमरदीन का विस्तृत मौखिक तौर पर मेरे पत्र का आपका उत्तर इस प्रकरण के साथ पहुंचा कि आर्य धर्म और इस्लाम धर्म के दो तीन मामलों पर बहस की जाए। और मुबाहस: के नियम दोनों सदस्यों की इच्छानुसार निर्धारित किये जाएं। अत: इसके उत्तर में सेवा में कष्ट देता हूं कि मेरा उद्देश्य पेशावर से कदियान आने का केवल यही था। और अब तक भी इसी आशा पर ठहरा हूं कि आप के चमत्कार और विलक्षण करामात, इल्हाम और **आसमानी निशानों** की पुष्टि करके देख लूं तथा इससे पूर्व कि किसी अन्य सिद्धांत पर बहस की जाए यही मामला विशेष प्रतिष्ठित लोगों की एक सभा में भलीभांति तय होना चाहिए। और यदि इसके सिद्ध करने में आप असमर्थ होकर बचना चाहें तो अन्य बहस से भी मुझे किसी प्रकार का इन्कार नहीं। यहां पर यह बात भी स्मरण रखने योग्य है कि अपने घर में बैठकर अपने अनुयायियों के सामने सबूत को देना और बात है तथा उलेमा और प्रकाण्ड विद्वानों में पुष्टि होना और चीज़ है। आशा है कि आप सही उत्तर से सम्मानित करें और बहाने

इत्यादि को मध्य में न लाएं। नियाज़मंद (आज्ञाकारी) लेखराम, आर्य समाज क़ादियान दोबार, तीसरी बार आप से निवेदन करता हूं कि यदि तनिक भी सच्चाई के लक्षण रखते हो तो दिखलाइए अन्यथा ख़ुदा के लिए रुक जाइए। बर रसूलां बलाग़ बाशिद व बस।

लेखराम

पंडित लेखराम का तीसरा पत्र

मिर्ज़ा साहिब बन्दगी!

मुझे लंबे चौड़े अलिफ़ लैला के उपन्यासों से नफ़रत है। इसलिए शब्दों की पुनरावृति से भी पत्र को लंबा करना नहीं चाहता हूं। सेवा में खुलासा प्रस्तुत है कि वही शर्तें (ख़ुदाई निशान दिखाने के बारे में) जो मैंने तैयार करके भेजी थीं। जिन की नकल आपके पास मौजूद है। आपकी अपनी शर्तों सहित चार न्यायकर्ताओं के पास जाना चाहिए। जो न्यायकर्ताओं से तय हो कर आए उन पर हम दोनों को अमल करना चाहिए किसी हकीम का कथन है "यके दरगीर व मुहकम गीर" अर्थात् एक दरवाजा पकड़ ले और उसे ही दृढ़तापूर्वक पकड़े रख।

मेरा इस पर अमल है। परन्तु अफ़सोस है कि आप किसी बात पर ठहरते दिखाई नहीं देते। हे भाई यह तो अवश्य होगा कि (आसमानी निशान का सच्चा या झूठा होने के समय) यदि मेरे लिए मुहम्मदी धर्म की शर्त है। तो आपके लिए आर्य धर्म भी आवश्यक है। ऐसी स्थिति में बदला तीन सौ रुपया होगा। यदि ख़ुदा वंद कृपालु ने सच्चाई की विजय की तो रुपया ले लूंगा। अन्यथा आपका रुपया आपके सुपुर्द और मेरी मेहनत बर्बाद और आपकी आय दोहरी

और दोहरा पुण्य। आपकी तो पांचो उँगलियाँ घी में हैं। घबराते क्यों हो। आपका मुजीबुद्दावात★ होने का दावा है और यदि इसी प्रकार मौखिक जमा खर्च करना ही पसंद है तो बहुत अच्छा है। खयाली पुलाव पकाइए और समस्त संसार में किसी का सत्कार मत कीजिए। आपका अधिकार है हाथ अपना, जीभ अपनी। मुझे यहां आज यहां आए पच्चीस दिन का समय व्यतीत हो गया। मैं कल परसों तक जाने वाला हूं। यदि कुछ बहस करना है तो भी और यदि शर्तें (अर्थात् निशान दिखाने का अहदनाम:) न्यायवानों के पास भेजनी हैं तो भी निर्णय कीजिए। अन्यथा बाद में यारों में डींगें मारने का कुछ लाभ न होगा। परन्तु उचित होगा कि आज ही मदरसे के मैदान में पधारें। शैतान, शफाअत और शक्क़ुल क़मर का सबूत दें। व्यवस्था के लिए न्यायकर्ता भी नियुक्त कर लीजिए। मेरी ओर से मिर्ज़ा इमामुद्दीन साहिब को न्यायकर्ता समझ लें। यदि इस पर भी आपको बस नहीं तो ख़ुदा के लिए रुक जाइए।

आज्ञाकारी लेखराम - 13 दिसंबर 1885 ई०

चौथा पत्र

जनाब मिर्ज़ा साहब! नमस्ते

आपका दो पृष्ठों का पत्र आया है जिससे साफ़ तौर पर स्पष्ट हुआ

★इस मुजीबुद्दावात शब्द से लेखराम का अरबी जानना नितांत स्पष्ट तौर पर सिद्ध होती है जिस बच्चे ने अभी अरबी का पहला क़ायदा पढ़ा होगा वह जानता है कि मुजीब का शब्द ख़ुदा तआला के लिए आता है अर्थात दुआओं का स्वीकार करने वाला यह बाब इफ़आल से फाइल का सीग़ा है। अत: लेखराम को यह कहना चाहिए था कि आपको मुस्तजाबुद्दावात होने का दावा है अब विचार करो कि आर्य लोगों का कितना झूठ है कि लेखराम को अरबी भी आती थी यह उसके हाथ के लिखे हुए पत्र हैं जो यहां लिखे जाते हैं। सच तो यह है कि यह व्यक्ति दोनों भाषाओं से वंचित था न संस्कृत जानता था न अरबी और झूठ बोलने वाले की हम जीभ बंद नहीं कर सकते। इसी से

कि पवित्र क़ुर्आन केवल इब्राहीम, मूसा, ईसा, मुहम्मदसअव, युसूफ़, लूत, सिकंदर, लुक़मान के किस्सों और व्यर्थ की बातों से भरा हुआ है। मुझे बीते हुए कल के पत्र की शर्तों पर बहस करना स्वीकार है। और आप स्पष्ट तौर पर हील:, बहाना, टाल-मटोल और वाद-विवाद कर रहे हैं। मिर्ज़ा जी अफ़सोस, अफ़सोस आपको फ़ैसला करना स्वीकार नहीं है। किसी ने क्या सच कहा है।"उज्र ना मा'क़ूल साबित मी कुनद तक्‌सीर रा" इसके अतिरिक्त आप द्वितीय मसीह हैं। स्वयं के दावे को सिद्ध करके दिखाइए। अन्यथा व्यर्थ शोर और उपद्रव न मचाइए।

लेखराम आर्य समाज क़ादियान- 9 बजे दिन

पांचवां पत्र :-

मिर्ज़ा साहिब - कुन्दन कोह (इसके आगे एक टूटा शब्द है जो पढ़ा नहीं जाता) अफ़सोस कि आप स्वयं को घोड़ा और दूसरों के घोड़े को खच्चर बताते हैं। मैंने वैदिक आरोप का बुद्धि से उत्तर दिया और आपने कुर्आनी आरोप का उत्तर नकल से। परन्तु वह बुद्धि से बहुत दूर है यदि आप निवृत्त नहीं तो मुझे भी काम बहुत है। अच्छा आसमानी निशान तो दिखा दें यदि बहस नहीं करना चाहते तो। रब्बुल अर्श खैरुल माकिरीन से मेरे बारे में कोई आसमानी निशान तो मांगे ताकि निर्णय हो।★ लेखराम

★ इस जगह लेखराम ने निशान मांगते समय ख़ुदा तआला का नाम ख़ैरुल माकिरीन रखा। और ख़ुदा तआला के बारे में माकिर का शब्द उस स्थिति में बोला जाता है कि जब वह बारीक सामान से अपराधी को मारता या अपमानित करता है। अत: लेखराम के मुंह से स्वयं वे शब्द निकल गए जिनसे सिद्ध होता है कि वह अपनी मौत का निशान मांगता था। अर्थात ऐसा निशान जिसके सामान बहुत बारीक हों। अत: ख़ुदा की कुदरत कि उसी प्रकार से उसकी मृत्यु हुई। और ऐसे क़ातिल के हाथ से मारा गया जिसकी

इन समस्त पत्रों के उत्तर में विस्तारपूर्वक पत्र लिखे गए थे जिनका नकल करना यहां आवश्यक नहीं। लेखराम की तबियत में इफ़्तिरा और झूठ का तत्त्व बहुत था इसलिए वह बार-बार अपने पत्रों में लिखता है कि बहस नहीं करते। मुझे कोई निशानी नहीं दिखाते। और उचित उत्तर नहीं देते। हालांकि बहस के लिए यह साफ तरीका उसके सामने प्रस्तुत किया गया कि वह वेद की पाबंदी से और उसकी श्रुतियों

कार्रवाई प्रत्येक को अत्यंत आश्चर्य में डालती है कि यह उसने क्योंकर ठीक प्रकाशमान दिन में आक्रमण किया, और क्योंकर आबाद घर में उसे हाथ उठाने का साहस हुआ, और क्योंकर वह छुरी मारकर साफ़ निकल गया, और क्योंकर हिन्दुओं की एक आबाद गली में मक्‌तूल के वारिसों के शोर डालने के बावजूद पकड़ा न गया। तो जब हम इन घटनाओं पर ध्यानपूर्वक विचार करते हैं तो तबियत तुरंत इस ओर चली जाती है कि यही वह कार्य है जिसे ख़ैरुल माकिरीन की ओर सम्बद्ध करना चाहिए। हम लिख चुके हैं ख़ुदा का नाम पवित्र क़ुर्आन के अनुसार ख़ैरूल माकिरीन उस समय कहा जाता है कि जब वह किसी दण्ड में अपराधी को बारीक सामानों के प्रयोग से दण्ड में गिरफ़्तार करता है। अर्थात उसके दण्ड के ऐसे सामान उपलब्ध करता है कि जिन सामानों को अपराधी किसी अन्य इरादे से अपने लिए स्वयं उपलब्ध करता है। तो वही सामान अपनी अच्छाई या प्रसिद्धि के लिए अपराधी जमा करता है। वही उसके अपमान और मौत का कारण हो जाते हैं। प्रकृति का नियम साफ़ गवाही देता है कि ख़ुदा का यह कार्य भी दुनिया में पाया जाता है कि वह कभी बेशर्म और बेरहम अपराधियों का दण्ड उनके हाथ से दिलवाता है तो वे लोग अपने अपमान और तबाही के सामान अपने हाथ से जमा कर लेते हैं और उनकी नज़र से वे बातें उस समय तक गुप्त रखी जाती हैं जब तक कि ख़ुदा का प्रारब्ध उतर जाए। अतः इस गुप्त कार्रवाई की दृष्टि से ख़ुदा का नाम माकिर है। दुनिया में इसके हज़ारों नमूने पाए जाते हैं। तो लेखरम के मामले में ख़ुदा का मक्र यह है कि सर्वप्रथम उसी के मुंह से कहलाया कि मैं ख़ैरुल माकिरीन से अपने बारे में निशान मांगता हूं इस निवेदन में उसने ऐसा अज़ाब मांगा जिसके सामान गुप्त हों और ऐसा ही घटित हुआ क्योंकि जिस व्यक्ति को शुद्ध करने के लिए उसने रविवार का दिन निर्धारित किया था और आर्यों का रविवार के दिन एक खुशी का जलसा तय हुआ था जैसा कि ईद का दिन होता है। ताकि उस व्यक्ति को शुद्ध किया जाए। तो वही खुशी के सामान उसके लिए तथा उसकी क़ौम के लिए मातम के सामान हो गए और ख़ैरुल माकिरीन के नाम को खुदा तआला ने समस्त आर्यों को भलीभांति समझा दिया। इसी से

के हवाले से बहस करे और हम पवित्र क़ुर्आन की पाबंदी से और उस की आयतों के हवाले से बहस करें। तो क्यों कि वह मात्र मूर्ख था और उसमें यह भी शक्ति नहीं थी कि प्रत्येक स्थान पर वेद की श्रुति प्रस्तुत कर सके। इसलिए वह चालाकी से हमारी मूल मांग को लिखने में ही नहीं लाता था। हां हंसी-ठट्ठे से बार-बार आसमानी निशान मांगता था। तो हम यहां अपना अंतिम पत्र नक़ल कर देते हैं जो उसके अंतिम प्रश्न के उत्तर में लिखा गया था और वह यह है: जनाब पंडित साहिब! आपका पत्र मैंने पढ़ा आप निश्चित समझें कि हमें न बहस से इन्कार है और न निशान दिखलाने से। परन्तु आप सीधी नीयत से सच्चाई की मांग नहीं करते अनुचित शर्तें बहुत कर देते हैं। आपकी जीभ गालियां देने से रुकती नहीं। आप लिखते हैं कि यदि बहस नहीं करना चाहते तो रब्बुल अर्श और ख़ैरुल माकिरीन से मेरे बारे में कोई आसमानी निशान मांगे। यह कितने हंसी-ठट्ठे के वाक्य हैं। जैसे आप उस ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते जो गुस्ताखों को चेतावनी दे सकता है। शेष रहा यह संकेत कि ख़ुदा अर्श पर है और मक्र करता है यह स्वयं आपकी अज्ञानता है। मक्र बारीक और गुप्त यत्न को कहते हैं जिसका ख़ुदा पर चरितार्थ करना अवैध नहीं और अर्श का वाक्य ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता के लिए आता है। क्योंकि वह सब ऊंचों से अधिक ऊंचा और प्रताप रखता है। यह नहीं कि वह किसी मनुष्य के समान किसी तख्त का मोहताज है। स्वयं क़ुर्आन में है कि प्रत्येक वस्तु को उसने थामा हुआ है और वह क़ायम रहने वाला है जिस को किसी वस्तु का सहारा नहीं। फिर जब पवित्र क़ुर्आन यह फ़रमाता है तो अर्श का आरोप करना कितना अन्याय है। आप अरबी

से अनभिज्ञ हैं। आपको मक्र के अर्थ भी मालूम नहीं। मक्र के अर्थ में ऐसी कोई अवैध बात नहीं है जो ख़ुदा तआला की ओर सम्बद्ध नहीं हो सकती। दुष्टों को दण्ड देने के लिए ख़ुदा के जो बारीक और गुप्त कार्य हैं उनका नाम मक्र है। शब्दकोश देखो फिर ऐतराज़ करो। मैं यदि आपके कथनानुसार वेद से अनपढ़ हूं तो क्या हानि है। क्योंकि मैं आपके मान्य सिद्धांत को हाथ में लेकर बहस करता हूं। परन्तु आप तो इस्लाम के सिद्धांत से बाहर हो जाते हैं। साफ़ झूठ बनाते हैं। चाहिए था कि अर्श पर ख़ुदा का होना जिस प्रकार से माना गया है पहले मुझ से पूछते। फिर यदि गुंजाइश होती, ऐतराज़ करते और ऐसा ही मक्र के अर्थ पहले पूछते फिर ऐतराज़ करते। निशान ख़ुदा के पास है वह शक्तिमान है कि आप को दिखाए।

वस्सलामो अला मनित्तबअल हुदा
ख़ाकसार - मिर्ज़ा गुलाम अहमद

और वह मुआहिद: जो निशानों के देखने के लिए लेखक और लेखराम के मध्य लिखा गया था उसका शीर्षक जो लेखराम ने अपने हाथ से लिखा था यह है- "ओम परमात्मने नमः हे सच्चिदानंद स्वरुप परमात्मा सत्य का प्रकाश कर और असत्य का नाश कर ताकि तेरी सत्य वेद विद्या सब संसार में परमरत होवे।★ फिर इसके बाद उस लंबे चौड़े प्रतिज्ञा पात्र का खुलासा यह है कि यदि कोई भविष्यवाणी लेखराम को बताई जाए और वह सच्ची न हो तो वह हिन्दू धर्म की सच्चाई का प्रमाण होगी और भविष्यवाणी करने वाले पर अनिवार्य

★ यह शर्त कि लेखराम इस्लाम को स्वीकार करे उस समय की शर्त है जबकि कुछ मालूम न था कि जो भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की ओर से होगी उसका निबंध क्या होगा [इसी से]

होगा कि आर्य धर्म को अपनाए या तीन सौ साठ रुपए लेखराम को दे दे जो पहले से शरमपत निवासी क़ादियान की दुकान पर जमा करा देना होगा। और यदि भविष्यवाणी करने वाला सच्चा निकले तो यह इस्लाम की सच्चाई का प्रमाण होगा और पंडित लेखराम पर अनिवार्य होगा कि इस्लाम धर्म स्वीकार करे।★ फिर इसके बाद वह भविष्यवाणी बताई गई जिसके अनुसार 6 मार्च 1897 ई० को लेखराम के जीवन का अन्त हुआ। परन्तु इससे पहले कि वह भविष्यवाणी लेखराम पर प्रकट की जाती दोबारा विज्ञापन द्वारा 20 फरवरी 1886 ई० उनको सूचना दी गई थी कि यदि उनको भविष्यवाणी प्रकट करने से कष्ट पहुंचे तो उसे प्रकट न किया जाए। परन्तु लेखराम ने बड़ी निर्भीकता और गुस्ताखी से जैसा के 20 फरवरी 1893 ई० के विज्ञापन में इस बात की चर्चा है, मेरी ओर अपना हस्ताक्षर किया हुआ एक कार्ड भेजा कि मैं आप की भविष्यवाणियों को निरर्थक समझता हूं। मेरे बारे में जो चाहो प्रकाशित करो मेरी ओर से इजाज़त है और मैं कुछ भय नहीं करता। इस पर भी हमारी ओर से बड़ा विलम्ब हुआ और कारण यह हुआ कि अभी ख़ुदा तआला की ओर से मुझ पर भविष्यवाणी की मीआद नहीं खुली थी और लेखराम का आग्रह था मीआद की क़ैद से भविष्यवाणी बताई जाए। अंततः 20 फरवरी 1893 ई० को बहुत ध्यान, दुआ और विनय के बाद मालूम हुआ कि आज की तिथि से अर्थात् 20 फरवरी 1893 ई० से छः वर्ष के मध्य लेखराम

★ यह लेखराम ने भविष्यवाणी के अंजाम के लिए दुआ की थी कि यदि इस्लाम सच्चा है तो इनकी भविष्यवाणी सच्ची निकले और यदि हिन्दू धर्म सच्चा है तो आपकी की हुई भविष्यवाणी झूठी निकले अब हम दर्शकों से पूछते हैं कि यदि इस लेखराम वाली भविष्यवाणी को झूठा समझा जाए तो किस सदस्य पर इस दुआ का दुष्प्रभाव पड़ेगा? इसी से

पर सख्त अज़ाब जिसका परिणाम मृत्यु है उतारा जाएगा और इसके साथ यह अरबी इल्हाम-

عجْل جَسَدٌ له خوار۔ له نصبٌ وَ عَذاب

अर्थात् यह बछड़ा निर्जीव है जिसमें से निरर्थक आवाज़ आ रही है। अत: उसके लिए दुख की मार और अज़ाब है।

इस विज्ञापन के पृष्ठ 2 और 3 में यह इबारत है अब मैं इस भविष्यवाणी को प्रकाशित कर के समस्त मुसलमानों, आर्यों, ईसाइयों तथा अन्य फ़िर्क़ों पर प्रकट करता हूं कि यदि किसी व्यक्ति पर 6 वर्ष के अन्दर तक आज की तिथि से अर्थात् 20 फरवरी 1893 ई० से कोई ऐसा अज़ाब जो साधारण कष्टों से निराला और विलक्षण हो अर्थात् जो रोग और बीमारियां मनुष्य के लिए स्वाभाविक तथा मामूली हैं जिनसे मनुष्य कभी स्वास्थ्य पाता और कभी मरता है उनमें से न हो। और अपने अन्दर ख़ुदाई धाक रखता हो (अर्थात् ख़ुदा के प्रकोप के निशान उसमें मौजूद हों) न उतरे तो समझो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और न उसकी रूह से मेरा यह बोलना है (अर्थात् मेरे सच और झूठ का आधार यही भविष्यवाणी है) और यदि मैं इस भविष्यवाणी में झूठा निकला तो मैं प्रत्येक दण्ड भुगतने के लिए तैयार हूं। और इस बात पर सहमत हूं कि मेरे गले में रस्सी डालकर सूली पर खींचा जाए। 20 फरवरी 1893 ई०

यहां न्यायवान सोचें कि इस भविष्यवाणी के झूठ निकलने की स्थिति में मैं किस अपमान के उठाने के लिए तैयार था। और अपने सच और झूठ का भविष्यवाणी के किस श्रेणी पर निर्भर किया गया था। फिर वे लोग जो ख़ुदा के अस्तित्व को मानते तथा इस बात को

जानते हैं कि उसके इरादे के अधीन सब कुछ हो रहा है। और प्रत्येक झगड़े का अंतिम निर्णय उसके हाथ से होता है। यह कैसे कह सकते हैं कि ऐसा महान मुकदमा जिसके परिणाम की दो बड़ी भारी क़ौमें प्रतीक्षा में थीं। वह ख़ुदा के ज्ञान और इरादे के बिना यों ही संयोग से प्रकटन में आ गया। मानो जो मुकदमा ख़ुदा को सोंपा गया था और इसके बिना कि उसके निर्णय करने वाले आदेश से सुशोभित हों यों ही उसकी अज्ञानता में दाखिल दफ़्तर हो गया। यदि ऐसे विचार विश्वसनीय हैं तो समस्त नुबुव्वतों का सिलसिला और शरीयतों की समस्त व्यवस्था सहसा अस्त-व्यस्त हो जाएगी। क्योंकि जो बात सीमाबद्ध करने के बाद तथा इतने आग्रह के दावे के पीछे दुश्मन के मुकाबले पर आकाशीय गवाही के तौर पर परकटन में आ गई और अत्यन्त रोशन तौर पर निर्धारित निशानियों के अनुसार उसका प्रकटन हुआ। यही वही निरर्थक और झूठ समझा जाए तो फिर कहां का धर्म और कहां का ख़ुदा का अस्तित्व, अपितु समस्त आकाशीय सच्चाइयों का सहसा खून हो जाएगा।

फिर दूसरी इल्हामी भविष्यवाणी जो लेखराम के बारे में हुई करामातुस्सादिक़ीन के पृष्ठ 54 और अंतिम पृष्ठ के टाइटल पेज में वर्णित है और वह यह है:

الا انّی فی کُلّ حرب غالب　　　فکدنی بما زَوّرتَ فالحق یغلبٌ

وبشّرنی ربّی و قال مبشّرا　　　ستعرف یوم العید والعید اقربٌ

و منھا ما وعدنی ربّی و استجاب دعائی فی رجل مفسد عدوّ اللّٰہ و رسوله المسمّی لیکھرام الفشاوری۔ واخبرنی ربّی انّه من الھالکین۔ انه کان یسب نبیّ اللّٰہ و یتکلم فی شانه بکلمات خبیثة فدعوت علیه

فبشـرنی ربّی بموتـه فی سـتّ سـنة ان فی ذالـك لآيـة للطالبـين۔

अनुवाद:- मैं प्रत्येक युद्ध में विजयी हूं अर्थात् प्रत्येक मुक़ाबले में मुझे विजय है (हे मुहम्मद हुसैन बटालवी) जो कुछ तू मक्र करता है निस्सन्देह कर कि अन्त में सच अवश्य विजयी होगा। और ख़ुदा ने मुझे एक निशान की खुशख़बरी देकर कहा कि तू ईद का दिन शीघ्र ही पहचान लेगा। अर्थात् वह खुशी का दिन जिसमें वह निशान प्रकट होगा। और उस निशान की यह निशानी है कि उस दिन से मामूली ईद क़रीब होगी और ख़ुदा ने मुझे वादा दिया। और एक ख़ुदा तथा रसूल के शत्रु उपद्रवी के बारे में मेरी दुआ सुनी जो लेखराम पेशावरी है और मुझे ख़बर दी कि वह मरेगा और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां दिया करता था और मुंह पर गंदी बातें लाता था। तो मैंने उस पर बद्दुआ की। ख़ुदा ने मेरी दुआ स्वीकार कर के मुझे ख़बर दी कि वह छः वर्ष के समय में मर जाएगा और इसमें ढूंढने वालों के लिए निशान हैं।

और यह इल्हाम कि عجـل جسـد لہ خـوار لہ نصـب و عـذاب जिसका अभी वर्णन कर चुके हैं अर्थात् लेखराम सामिरी का बछड़ा है और उसी बछड़े की तरह उसे अज़ाब होगा। यह अत्यंत अर्थपूर्ण इल्हाम है जो सामिरी के बछड़े की समानता की शैली में ग़ैब के अत्यंत ऊंचे रहस्य वर्णन कर रहा है। उनमें से एक यह है कि सामरि का बछड़ा यहूदियों की ईद के दिन में टुकड़े-टुकड़े किया गया था। जेसा कि तौरात ख़ुरूज अध्याय 32 आयत 5 से सिद्ध होता है और वह यह है। हारून ने यह कह कर मुनादी की कि कल ख़ुदावंद की ईद है। तो ऐसा ही इस्लामी ईद के दिन के क़रीब अर्थात् 6 मार्च

1893 ई० को लेखराम क़त्ल हुआ। और सामिरी के बछड़े को तबाह करने के लिए ख़ुदा की किताबों में ईद के दिन की विशिष्टता थी। वह ईद ही के दिन की घटना थी। जबकि सामिरी का बछड़ा ख़ुदा के आदेश से पीसा गया। इसलिए ख़ुदा तआला ने लेखराम का नाम सामिरी का बछड़ा रखकर एक ऐसा शब्द प्रयोग किया जो इस बात पर अनिवार्य तौर पर मार्गदर्शन कर रहा था कि लेखराम भी ईद के दिनों में ही क़त्ल किया जाएगा। और यद्यपि ख़ुदा तआला के कलाम के बारीक रहस्य जानने वाले सामरी का बछड़ा नाम रखने से और फिर उस अज़ाब की चर्चा करने से समझ सकते थे आवश्य है कि लेखराम की मृत्यु भी अपने दिन की दृष्टि से सामिरी के बछड़े की तबाही के दिन के समान होगी। परन्तु फिर भी ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम में इस संक्षेप को पर्याप्त नहीं समझा। अपितु स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया ستعرف يوم العيد والعيد اقرب अर्थात् लेखराम के क़त्ल की घटना ऐसे दिन में होगी जिससे ईद का दिन मिला हुआ होगा। और यह भविष्यवाणी कि ईद के दिन के क़रीब लेखराम की मृत्यु होगी हमारी ओर से एक ऐसी प्रसिद्ध ख़बर थी कि हिन्दुओं ने लेखराम के मरने के साथ ही शोर मचा दिया कि यह व्यक्ति पहले से कहता था कि लेखराम ईद के दिनों में मरेगा। जैसा कि अख़बार पंजाब इत्यादि हिन्दू अख़बारों ने इस पर बहुत ही ज़ोर दिया। मालूम होता है कि कुछ उपद्रवी हिन्दुओं ने भविष्यवाणी के यह विवरण हमारे मुंह से★

★परिशिष्ठ पंजाब समाचार 10 मार्च 1897 ई० में मेरे बारे में लिखा है कि कहा करते थे कि पंडित को मार डालेंगे और इस अवधि में तथा अमुक दिन अर्थात ईद के दूसरे दिन में एक दर्दनाक हालत में मरेगा। अत: यह बात तो एडीटर ने अपनी ओर से बना ली कि मार डालेंगे। परन्तु दिन और मृत्यु के रूप की चर्चा स्वयं हमारी भविष्यवाणी का एक प्रसिद्ध उद्देश्य था जो निसन्देह बहुत बार वर्णन किया गया था इसी से

सुनकर उस समय सुनकर एक असंभव बात की तरह किसी समय हमें दोषी ठहराने के लिए इन्हें याद रखा था। अर्थात् यह विचार था कि ऐसी खुली खुली निशानियां कदापि पूरी नहीं होंगी और हम पीछे से शर्मिंदा करेंगे। परन्तु जब लेखराम वास्तव में ईद के दूसरे दिन मारा गया तो इन भविष्यवाणीयों को दूसरे पहलू पर अविश्वसनीय करना चाहा। अर्थात् यह कि ईद का दिन पहले से सोच समझकर परस्पर मशवरे से ठहराया गया था। परन्तु यदि यही सच था तो क्यों लेखराम की ईद के दिनों में पूर्ण सुरक्षा न की गई ताकि षड्यंत्र सफल न होता। जिसका आर्यों को कई वर्षों से ज्ञान था। विचित्र संयोग यह हुआ कि जिस दिन लेखराम के प्राण निकले अर्थात् रविवार का दिन वह आर्यों ने विशेष एक ईद का दिन ठहराया था। प्रथम तो वह स्वयं रविवार का दिन था जो हिन्दुओं की ही ईदों में से एक ईद है। द्वितीय क़ातिल को शुद्ध करने के लिए जो स्वयं को नव मुस्लिम प्रकट करता था वह एक को खुशी का दिन ठहराया गया था जिसमें सामान्य जलसे मैं क़ातिल को फिर हिन्दू बनाने का इरादा था।

अतः इज्ल का नाम जो लेखराम को ख़ुदा के इल्हाम ने दिया यह अपने अन्दर एक बारीक रहस्य रखता था और इसमें कई ग़ैब के मामलों के संकेत भरे हुए थे। एक तो यही जो ईद के दिनों में सामिरी के बछड़े की तरह ख़ुदा के प्रकोप के नीचे आता दूसरे यह कि सामिरी का बछड़ा मनुष्य के हाथ से टुकड़े टुकड़े किया गया था और फिर जलाया गया और फिर दरिया में डाला गया। अतः ये तीनों बातें लेखराम के साथ भी प्रकटन में आईं। तीसरे यह कि सामिरी के बछड़े की उपासना की गई थी और ख़ुदा ने उस क़ौम पर एक

संक्रामक रोग भेजा जो संभवतः ताऊन थी। जैसा कि तौरात अध्याय 32 आयत 25 में है कि ख़ुदावन्द ने उनके बछड़े बनाने के कारण लोगों पर मरी भेजी। ऐसे ही लेखराम की प्रशंसा उपासना तक पहुंचाई गई और मुसलमानों को अकारण दुख दिया गया। ये लोग अपने हृदयों में भलीभांति समझते थे कि यह ख़ुदा का कार्य है, भविष्यवाणी करने वाले का षड्यंत्र नहीं। फिर भी बार-बार फ़र्याद करके सरकार से इस लेखक के घर की तलाशी कराई और बहुत सा अनुचित शोर डाल कर बछड़े के उपासकों से समानता पूरी की। कोई क्या जानता है कि भविष्य में क्या होने वाला है। परन्तु हम इस पर ईमान रखते हैं कि ख़ुदा ने जो समानता वर्णन की वह पूरी समानता है।

फिर लेखराम के बारे में एक और इल्हामी भविष्यवाणी है जो पुस्तक बरकातुद्दुआ के टाइटल पेज के नीचे प्रथम एवं अंतिम पन्ने पर दर्ज है। और यह भविष्यवाणी अप्रैल 1893 ई० में अर्थात् पहली भविष्यवाणी से तीन माह बाद की गई थी। इस भविष्यवाणी का संक्षिप्त वर्णन नीचे है कि सय्यद अहमद खां साहिब के सी० एस० आई० ने एक पुस्तक दुआ के इन्कार के बारे में लिखी थी और उसका नाम रिसालतुद्दुआ वलइस्तिजाबात रखा था। यह पुस्तक सच्चाई के सर्वथा विपरीत थी। इसलिए मैंने इसके उत्तर में पुस्तक बरकातुद्दुआ लिखी और उस पुस्तक के लिखते समय मुझे यह आवश्यकता हुई कि दुआ स्वीकार होने का कोई नमूना सय्यद साहिब के सामने प्रस्तुत करूं। अतः ख़ुदा की कृपा से उन्हीं दिनों में लेखराम के बारे में मेरी दुआ स्वीकार हो चुकी थी। तो मैंने बरकातुद्दुआ के टाइटल पेज में यह उदाहरण प्रस्तुत कर दिया, बरकातुद्दुआ के पढ़ने वाले जब इस

पुस्तक को खोलेंगे तो टाइटल पेज के पहले पृष्ठ पर ही जो अन्दर का पृष्ठ है रंगीन काग़ज़ पर यह लिखा हुआ पाएंगे।

स्वीकार हो चुकी दुआ का नमूना

इसी कारण से इस पुस्तक का नाम बरकातुद्दुआ रखा गया था इसमें दुआ की बरकतों का नमूना प्रस्तुत किया गया। इस पृष्ठ में लेखराम के बारे में यह इबारत है कि:- मैं इक़रार करता हूं कि यदि जैसा कि ऐतराज़ करने वालों ने समझा है (लेखराम की बारे में) भविष्यवाणी का खुलासा अंततः यही निकला कि कोई मामूली ज्वर आया या मामूली तौर पर कोई दर्द हुआ या हैज़ा हुआ और फिर स्वास्थ्य की असल हालत क़ायम हो गई तो वह भविष्यवाणी नहीं समझी जाएगी...तो इस स्थिति में मैं निस्संदेह उस दण्ड के योग्य ठहरूंगा जिसका वर्णन मैंने किया है परन्तु यदि इस भविष्यवाणी का प्रकटन इस प्रकार से हुआ जिसमें ख़ुदा के प्रकोप के निशान खुले-खुले तौर दिखाई दें तो फिर समझिए ख़ुदा तआला की ओर से है...परंतु भविष्यवाणी वास्तव में एक महान धाक के साथ प्रकट हो तो वह स्वयं हृदयों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। और यह समस्त विचार और यह समस्त आलोचनाएं जो समय से पहले हृदयों में पैदा होती हैं। ऐसी मिट जाती हैं कि न्यायप्रिय बुद्धिमान लोग एक शर्म के साथ अपनी रायों से रुजू (लौटते) करते हैं। इसके अतिरिक्त यह संसार भी तो प्रकृति के नियम के अधीन है। यदि मेरी ओर से इस भविष्यवाणी की बुनियाद केवल इतनी ही है कि मैंने केवल डींगे मार कर कुछ सम्मानित रोगों को मस्तिष्क में रखकर और अटकल से काम ले कर यह भविष्यवाणी प्रकाशित

की है। तो जिस व्यक्ति के बारे में यह भविष्यवाणी है वह भी तो ऐसा कर सकता है कि इन्हीं अटकलों की बुनियाद पर मेरे बारे में भविष्यवाणी कर दे। यदि यह ख़ुदा तआला की ओर से है। और मैं खूब जानता हूं कि ख़ुदा तआला की ओर से हैं तो अवश्य भयानक निशान के साथ वह घटित होगी और दिलों को हिला देगी और यदि उसकी ओर से नहीं तो मेरा अपमान प्रकट होगा। और यदि मैं उस समय अधम तावीलें करूंगा तो यह और भी अपमान का कारण होगा। वह अनादि, पवित्र और अत्यंत पुनीत अस्तित्व जो समस्त अधिकार अपने हाथ में रखता है वह झूठे को कभी सम्मान नहीं देता।★ यह बिल्कुल ग़लत है कि लेखराम से मुझको कोई व्यक्तिगत शत्रुता है। मुझे व्यक्तिगत तौर पर किसी से भी शत्रुता नहीं। अपितु इस व्यक्ति ने सच्चाई से शत्रुता की। और एक ऐसे कामिल और पुनीत को जो समस्त सच्चाइयों का झरना था अपमान पूर्वक याद किया। इसलिए ख़ुदा ने चाहा कि अपने एक प्यारे का सम्मान संसार में प्रकट करे। इति

यह वह इल्हामी भविष्यवाणी के समर्थन में वह निबंध है जो बरकातुद्दुआ के टाइटल पेज के पृष्ठ पर लिखा हुआ है फिर उसी पृष्ठ के हाशिए पर एक और इल्हामी भविष्यवाणी लेखराम के बारे में है जिसका शीर्षक यह है

★ मैंने पहले स्पष्ट कह दिया था कि चूँकि ख़ुदा तआला झूठे को सम्मान नहीं देता इसलिए यदि मैं झूठा हूं तो यह भविष्यवाणी कदापि पूरी नहीं होगी। और मैंने साफ कह दिया था कि यह भविष्यवाणि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्मान प्रकट करने के लिए है। अत: जो व्यक्ति कहता है कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई उसे इक़रार करना चाहिए कि यहां ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान की कुछ भी परवाह नहीं की [इसी से]

लेखराम पेशावरी के बारे में एक और ख़बर

फिर आगे यह इबारत है- आज जो 2 अप्रैल 1893 ई० तद्नुसार 14 माह रमज़ान 1310 हिजरी है सुबह के समय थोड़ी सी ऊंघ की हालत में मैंने देखा कि मैं एक विशाल मकान में बैठा हुआ हूं और कुछ दोस्त भी मेरे पास मौजूद हैं। इतने में एक सुदृढ़ मोटा-ताजा भयानक रूप जैसे उसके चेहरे से खून टपकता है मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। मैंने नज़र उठाकर देखा तो मुझे मालूम हुआ कि वह एक नई बनावट और आदत का व्यक्ति है। जैसे मनुष्य नहीं अत्यंत कठोर और क्रूर फरिश्तों में से है। और उसका भय हृदयों पर छाया हुआ था और मैं उसे देखता ही था कि उसने मुझसे पूछा कि लेखराम कहां है? तथा एक और व्यक्ति का नाम लिया कि वह कहां है? तब मैंने उस समय समझा कि यह व्यक्ति लेखराम और उस दूसरे व्यक्ति को दण्ड देने के लिए मामूर किया गया है। मुझे मालूम नहीं रहा कि वह दूसरा व्यक्ति कौन है। हां यह निश्चित तौर पर याद रहा (अर्थात् कश्फ़ की अवस्था मैं हृदय में गुज़रा है) कि वह दूसरा व्यक्ति उन्हीं कुछ आदमियों में से था जिसके बारे में विज्ञापन दे चुका हूं (अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो मृत्यु की भविष्यवाणी के विज्ञापन का निशाना हो चुका है जिसके बारे में किसी समय कह सकते हैं कि उसके बारे में विज्ञापन हो चुका है) और यह रविवार का दिन और चार बजे सुबह का समय था इस पर ख़ुदा की हर प्रकार की प्रशंसा।

यह समस्त भविष्यवाणी ऊंचे स्वर में कह रही है कि लेखराम के जीवन का अन्त क़त्ल द्वारा प्रारब्ध था। इसी कारण जो नज़्म लेखराम के बारे में इल्हाम के मस्तक पर लिखी गई थी। उसमें ऐसे

शब्द दर्ज हैं जो लेखराम के क़त्ल की ओर संकेत करते हैं। अतः वह इल्हामी विज्ञापन जो लेखराम की मृत्यु के बारे में पुस्तक आईना कमालात ए इस्लाम के साथ सम्मिलित है उसके मस्तक के कुछ शेर जो क़त्ल को बताते हैं नीचे लिखे जाते हैं और वे ये हैं :-

عجب نوریست درجان محمدؐ
عجب لعلیست در کانِ محمدؐ

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में एक विचित्र प्रकाश है मुहम्मद की खान में एक अद्‌भुत लाल (पदम मोती) है।

عجب دارم دل آں ناکساں را
کہ رو تابند از خوانِ محمدؐ

मैं उन अयोग्य लोगों के दिलों पर आश्चर्य करता हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरख़्वान से मुंह फेरते हैं।

خدا زاں سینہ بیزارست صدبار
کہ ہست از کینہ دارانِ محمدؐ

ख़ुदा उस व्यक्ति से बहुत विमुख है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वैर रखता हो।

اگر خواہی نجات از مستیٔ نفس
بیا در ذیلِ مستانِ محمدؐ

यदि तू नफ़्स के मस्त होने से मुक्ति चाहता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मस्तानों में से हो जा।

اگر خواہی دلیلے عاشقش باش
محمدؐ ہست برہانِ محمدؐ

यदि तू उसकी सच्चाई का प्रमाण चाहता है तो उसका प्रेमी बन जा क्योंकि

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही स्वयं मुहम्मद का प्रमाण हैं।

بگیسوئے رسول اللہ کہ ہستم
نثار روئے تابانِ محمدؐ

रसूलुल्लाह के बालों की क़सम मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूरानी चेहरे पर आसक्त हूं।

بکار دین نترسم از جہانے
کہ دارم رنگ ایمانِ محمدؐ

धर्म के मामले में समस्त संसार से भी नहीं डरता कि मुझ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ईमान का रंग है।

فدا شد در رہش ہر ذرّۂ من
کہ دیدم حُسنِ پنہانِ محمدؐ

उसके मार्ग में मेरा हर कण क़ुर्बान है क्योंकि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुप्त सौंदर्य देख लिया है।

بدیگر دلبرے کارے ندارم
کہ ہستم کشتۂ آنِ محمدؐ

अन्य किसी प्रियतम से मेरा सम्बन्ध नहीं कि मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाज़-व-अदा का मक़्तूल हूं।

دلِ زارم بہ پہلویم مجوئید
کہ بستیمش بدامان محمدؐ

मेरे घायल हृदय को मेरे पहलू में तलाश न करो कि उसे तो हमने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामन से बांध दिया है।

تو جان ما منور کردی از عشق
فدایت جانم اے جانِ محمدؐ

तूने प्रेम के कारण हमारी जान को रोशन कर दिया। हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुझ पर मेरी जान न्योछावर हो।

چہ ہیبت ہا بدادند ایں جواں را
کہ ناید کس بمیدان محمدؐ

इस जवान को कितना रोब दिया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मैदान में कोई भी (मुकाबले पर) नहीं आता।

رہ مولیٰ کہ گم کردند مردم
بجو در آل و اعوان محمدؐ

ख़ुदा के उस मार्ग को जिसे लोगों ने भुला दिया है तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल और अन्सार में ढूंढ।

زظلمت ہادلے آنگہ شود صاف
کہ گردد از محبّان محمدؐ

दिल उस समय अंधकारों से पवित्र होता है जब वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोस्तों में दाख़िल होता है।

ندانم ہیچ نفسے در دو عالم
کہ دارد شوکت و شان محمدؐ

दोनों लोकों में मैं किसी व्यक्ति को नहीं जानता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सी शान व शौकत रखता हो।

خدا خود سوزد آں کرم دنی را
کہ باشد از عدوّان محمدؐ

ख़ुदा स्वयं उस अपमानित कीड़े को जला देता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं में से हो।

اگر خواہی کہ حق گوید ثنایت
بشو از دل ثنا خوانِ محمدؐ

यदि तू चाहता है कि ख़ुदा तेरी प्रशंसा करे तो तहे दिल से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यशोगान करने वाला बन जा।

سرے دارم فدائے خاکِ احمدؐ
دلم ہر وقت قربان محمدؐ

मेरा सर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैरों की धूल पर न्योछावर है और मेरा दिल हर समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान रहता है।

دریں رہ گر کشندم وربسوزند
نتابم رُو زِ ایوان محمدؐ

इस मार्ग में यदि मुझे क़त्ल कर दिया जाए या जला दिया जाए तो फिर भी मैं मुहम्मद की चौखट से मुंह नहीं फेरूंगा।

بسے سہل است از دنیا بریدن
بیاد حسن و احسان محمدؐ

संसार से सम्बन्ध विच्छेद करना बहुत ही आसान है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न और उपकार को याद करके।

دگر استاد را نامے نہ دانم
کہ خواندم در دبستان محمدؐ

मैं अन्य किसी उस्ताद का नाम नहीं जानता मैं तो केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदरसे का पढ़ा हुआ हूं।

مراآن گوشۂ چشمے بباید
نخواہم جُز گلستانِ محمدؐ

मुझे तो उसी आंख के दया-हाफिज की आवश्यकता है मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता।

من آن خوش مرغ از مرغان قدسم
کہ دارد جا بہ بستان محمدؐ

मैं स्वर्ग के पक्षियों में से वह उच्च कोटि का पक्षी हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ में बसेरा रखता है

دریغا گر دہم صد جان درین راہ
نباشد نیز شایان محمدؐ

यदि इस मार्ग में सौ जान से कुर्बान हो जाऊं तो भी अफ़सोस रहेगा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान के यथायोग्य नहीं।

الا اے دشمن نادان و بے راہ
بترس از تیغِ بُرّان محمدؐ

हे मूर्ख और गुमराह शत्रु होशियार हो जा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की काटने वाली तलवार से डर।

الا اے منکر از شان محمدؐ
ہم از نور نمایان محمدؐ

ख़बरदार हो जा हे वह व्यक्ति जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान और आप के चमकते हुए प्रकाश का इन्कारी है।

کرامت گرچہ بے نام ونشان است
بیا بنگر ز غلمان محمد

यद्यपि चमत्कार अब समाप्त है परन्तु तू आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दासों में देख ले।

लेखराम पेशावरी के बारे में एक भविष्यवाणी

(सविस्तार देखो आईना कमालात-ए-इस्लाम पृष्ठ 1,2,3 हाशिया पुस्तक के अंत में)

अतः इस भविष्यवाणी के सर पर यह कुछ शे'र हैं जिनमें से एक यह भी है कि (بترس از تیغ بُرّان محمد ﷺ) "बतर्स अज़ तेग़े बुर्राने मुहम्मद" जो साफ बता रहा है कि लेखराम का अंजाम यही था कि वह क़त्ल किया जाए और अंतिम शे'र पर लेखराम की ओर संकेत कर के हाथ बनाया हुआ है जैसा कि यहां बना दिया गया है ताकि यह संकेत हो कि तेग़े बुर्रां (धारदार तलवार) उसी पर गिरेगी और उसी की मृत्यु से चमत्कार प्रकट होगा।

फिर बरकातुद्दुआ के पृष्ठ 28 पर कुछ शे'रों में सय्यद अहमद खां पर व्यक्त किया गया है कि वह लेखराम की भविष्यवाणी में मुसतजाब दुआ (स्वीकार की हुई दुआ) के नमूने की प्रतीक्षा करें। और अंतिम शेर के नीचे मद खींच कर बरकातुद्दुआ के उन पृष्ठों की ओर सय्यद साहिब को ध्यान दिलाया गया है जिनमें लेखराम की भयानक मृत्यु का वर्णन करके मुसतजाबुद्दुआ (दुआ के स्वीकार होने) के नमूने का वर्णन है और वह शेर यह हैं:-

روئے دلبر از طلب گاران نمی دارد حجاب
می درخشد در خور و می تابد اندر ماہتاب

दिलबर का चेहरा अभिलाषी से छुपा नहीं है वह सूर्य में भी चमकता है और चंद्रमा में भी।

لیکن ایں روئے حسین از غافلاں ماند نہاں
عاشقے باید کہ بردارند از بہرش نقاب

परंतु वह सुन्दर चेहरा लापरवाहों से छुपा है। सच्चा प्रेमी चाहिए ताकि उसके लिए पर्दा उठाया जाए।

دامن پاکش زِ نخوت ہا نمی آید بدست
ہیچ راہے نیست غیر از عجز و درد و اضطراب

उसका पवित्र दामन अहंकार से हाथ नहीं आता। उसके लिए दर्द और बेचैनी के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं।

بس خطرناک است راہ کوچۂ یار قدیم
جاں سلامت بایدت از خود روی ہاسربتاب

उस अनादि प्रियतम का मार्ग बहुत ख़तरनाक है यदि तुझे ज्ञान की सलामती चाहिए तो स्वच्छन्दता को त्याग दे।

تاکلامش عقل و فہم ناسزایاں کم رسد
ہرکہ از خود گم شود او یابد آن راہ صواب

मूर्ख लोगों की बुद्धि उसके कलाम की तह तक नहीं पहुंच सकती जो अहंकार का छोड़ने वाला हो उसी को वह सही मार्ग मिलता है।

مشکل قرآن نہ از ابناء دنیا حل شود
ذوق آن میداند آں مستیکہ نوشد آن شراب

क़ुर्आन को समझने की समस्या दुनिया वालों से हल नहीं होती। इस शराब का स्वाद वही जानता है जो इस शराब को पीता है।

ایکہ آگاہی ندادندت زِ انوار درون
درحق ما ہرچہ گوئی نیستی جائے عذاب

हे वह व्यक्ति जिसे आंतरिक प्रकाश की कुछ ख़बर नहीं तो जो कुछ भी हमारे पक्ष में कहे नाराज़ होने का कारण नहीं।

از سر وعظ و نصیحت ایں سخن ہا گفتہ ایم
تامگرزیں مرہمے بہ گردد آن زخمی خراب

हमने नसीहत और हमदर्दी के तौर पर यह बातें कही हैं ताकि वह ख़राब ज़ख़म इस मरहम से अच्छा हो जाए।

از دعا کن چارۂ آزار انکار دعا
چون علاج مَے زِمَے وقت خمار و التہاب

दुआ के इन्कार का इलाज दुआ से ही कर। जैसे नशे के समय शराब का इलाज शराब से ही किया जाता है।

ایکہ گوئی گر دعاہا را اثر بودے کُجاست
سوئے من بشتاب بنمایم ترا چون آفتاب

हे वह व्यक्ति जो कहता है कि यदि दुवाओं में असर है तो दिखाओ कहां है। अत: मेरी ओर दौड़ ताकि मैं तुझे सूर्य के समान वह असर दिखाऊं।

ہاں مکن انکار زین اسرار قدرتہائے حق
قصّہ کو تہ کن بہ بین از ما دعائے مستجاب

देखो टाइटल पृष्ठ – 2,3,4

सरदार ख़ुदा की क़ुदरतों के भेदों का इन्कार न कर। बात समाप्त कर और हम से स्वीकार की जा चुकी दुआ देख ले।

यह अंतिम शेर का दूसरा चरण जिस के नीचे लम्बी लाइन डाल कर 2,3,4 लिखे गए हैं। यह बरकातुद्दुआ में इसी प्रकार लम्बी लकीर (मद) डाल कर लिखे गए हैं, ताकि सय्यद अहमद खां साहिब इन पृष्ठों को निकालकर पढ़ें और ताकि उन्हें मुस्तजाब दुआ के नमूने पर विचार करके भविष्य में परखने के बाद अपनी ग़लत राय को

त्यागने के लिए सामर्थ्य मिले। और पुस्तक बरकातुद्दुआ जब लिखी गई तो उसी युग में सय्यद साहिब की सेवा में अविलम्ब भेजी गई। और सय्यद साहिब का उत्तर भी आ गया था कि मैं बरकातुद्दुआ देख रहा हूं। अतः सय्यद साहिब ने अवश्य उन स्थानों को भी देखा होगा जिन में मुस्तजाब दुआ का नमूना प्रस्तुत किया गया था। तो लेखराम की मृत्यु के लिए दुआ करना यदपि उसकी गालियों तथा धृष्टता के कारण था। परन्तु यह भी अभीष्ट था कि सय्यद साहिब की सेवा में मुस्तजाब दुआ का एक नमूना प्रस्तुत किया जाए। अब सय्यद साहिब का कर्तव्य है अपनी इस दोषपूर्ण राय को बदल दें। ऐसा न हो कि एक व्यक्ति★ की तो जान गई और सय्यद साहिब वहीं के वहीं रहे।

ये वे भविष्यवाणियां हैं जो लेखराम की मृत्यु उसके बारे में 1893 ई० में सार्वजनिक तौर पर प्रकाशित की गई थीं और जो व्यक्ति उन पर विचार करेगा उसे मानना पड़ेगा कि इन भविष्यवाणियों में ठोस तौर पर 20 फरवरी 1893 ई० के प्रारंभ से पूर्वोक्त व्यक्ति की मृत्यु के लिए छः वर्ष की मीआद बताई गई थी। और कश्फ़ी घटना यह भी

★ लेखराम के बारे में एक भविष्यवाणी थी कि يقضى أمره فى ست अर्थात् छः में उसका काम समाप्त किया जाएगा। अब तक मुझे मालूम नहीं कि यह भविष्यवाणी हमारे किसी विज्ञापन या पुस्तक में अथवा हमारे किसी दोस्त की पुस्तक में छप गई या नहीं। परन्तु हमारी जमाअत में इसकी सार्वजनिक प्रसिद्धि है और विश्वास है कि दूसरों तक भी यह भविष्यवाणी पहुंची होगी जैसा कि आर्यों में ईद की भविष्यवाणी पहुंच गई। क्योंकि हमारी कोई बात राज़ के तौर पर नहीं रहती। इस भविष्यवाणी का जैसा कि अर्थ है ऐसा ही प्रकट हुआ। अर्थात लेखराम 6 मार्च को ज़ख़्मी हुआ और दिन के छठे घंटे में ज़ख़्मी हुआ। बटालवी साहिब यदि इस मौखिक रिवायत से इन्कार करते हैं। तो हदीसों के स्वीकार करने में उन्हें बड़ी कठिनाई होगी क्योंकि वे न केवल ज़बानी रिवायत हैं अपितु सौ डेढ़ सौ वर्ष के पश्चात लिखी गईं। जो बात ताजा हो और जिसके देखने सुनने वाले जीवित मौजूद हैं। उससे इन्कार करना बुद्धिमानों के नज़दीक बदनाम होना है। इसी से

प्रकट कर रही थी कि लेखराम की मृत्यु रविवार के दिन होगी। क्योंकि वह फ़रिश्ता जो लेखराम के दण्ड के लिए आया रविवार की रात को मुझ पर प्रकट हुआ था। जिससे मालूम होता था कि लेखराम की मृत्यु का दिन रविवार का दिन होगा। और इल्हाम में यह भी वयक्त किया गया था कि ईद के साथ के दिन में अर्थात् शव्वाल के दूसरे दिन में यह घटना होगी। और ख़ुदा की कुदरत है कि हिन्दुओं ने ईद का पता पहले से ख़ूब याद कर रखा था। परन्तु उस समय यह बात असंभव समझ कर केवल झुठलाने के उद्देश्य से याद कर लिया था। क्योंकि वह अपनी मूर्खता से यह समझते थे कि ऐसा होना किसी प्रकार संभव नहीं कि भविष्यवाणी में ऐसा विशेष निशान हो और वह सच्चा हो जाए। तो याद रखने से उद्देश्य यह था कि जब भविष्यवाणी ग़लत निकलेगी या ईद पर पूरी नहीं होगी तो हंसी-ठठ्ठे में उड़ाएंगे। परन्तु जब ख़ुदा ने उसी प्रकार भविष्यवाणी को पूरा कर दिया जैसा कि लिखा गया था तब हिन्दुओं ने तुरन्त अपना पहलू बदल लिया और कहा कि "ईद पर क़त्ल करने के लिए पहले से षड्यंत्र हो चुका था। अन्यथा ख़ुदा की आदत ऐसी नहीं है कि बारीक और विशेष निशान के साथ ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें किसी को बता दे।" किन्तु वह शक्तिमान ख़ुदा जो सच्चाई को संदिग्ध करना नहीं चाहता। उसने इस विचार को भी पहले से रद्द कर रखा था। जिसकी हिन्दुओं को ख़बर नहीं थी। अर्थात् उसने लेखराम के क़त्ल की घटना से सत्रह वर्ष पहले इस निशान की बराहीन अहमदिया में ख़बर दी है और ख़बर उस समय लिखी गई और प्रकाशित की गई थी जबकि लेखराम बारह या तेरह वर्ष का होगा और यह ऐसे संपादित और क्रमबद्ध ढंग पर बराहीन अहमदिया में मौजूद है कि मनुष्य को मानने के अतिरिक्त कुछ चारा नहीं। हम ख़ुदा तआला

की कृपा से 'सिराजे मुनीर' पुस्तक में इसे लिख चुके हैं और संक्षिप्त तौर पर इसका यह वर्णन है कि बराहीन अहमदिया के इल्हामों में मेरे बारे में फ़ित्नों कि यह ख़बर दी गई है अर्थात् यह वर्णन किया गया है कि तीन अवसरों पर तुम पर तीन फ़ित्ने खड़े होंगे।

अब इससे पूर्व कि इन तीन फ़ित्नों का वर्णन किया जाए। वर्णन की सफ़ाई के लिए इस बात का वर्णन करना आवश्यक है कि प्रत्येक झुठलाने को फ़ित्ने का नाम नहीं दिया जा सकता। अभी तो केवल इस हालत में झुठलाने को फ़ित्ने की संज्ञा दी जाएगी। जबकि वह झुठलाना एक उपद्रव के रूप में हो और एक जमाअत परस्पर सहमत हो कर किसी के माल, प्राण या सम्मान को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से अपनी शक्तियों को उस सीमा तक व्यय करें जहां तक एक व्यक्ति पूर्ण उत्तेजना की स्थिति में कर सकता है। तो फितने में आवश्यक है कि एक जमाअत हो और वह जमाअत किसी को हानि पहुंचाने के इरादे के लिए पूर्ण जोश के साथ परस्पर सहमति करले और एक उपद्रव के रंग में एक ख़तरनाक समूह बनाकर किसी के सम्मान, प्राण या माल पर आक्रमण करने के लिए तैयार हो जाए और परस्पर मशवरे से इन समस्त धोखों को अपनी तबियतों के उत्तेजित होने की हालत में असाधारण जोश की तरह प्रयोग में लाए। जिसके प्रयोग से विरोधी सदस्य पर कोई आकस्मिक आपदा आने की आशंका हो। अब जब कि फ़ित्ने के शब्द की परिभाषा ज्ञात हो चुकी तो इन तीन फ़ित्नों का वर्णन करता हूं। परन्तु शायद समझाने के लिए यह अधिक उचित होगा कि इससे पूर्व यह तीनों फ़ित्नों का विवरण बराहीन अहमदिया के पृष्ठों से प्रस्तुत करूं। सर्वप्रथम वे तीनों फ़ित्ने वर्णन कर दूं जो बराहीन अहमदिया के लिखने और प्रकाशित करने के पश्चात मुझ पर

गुज़र चुके हैं। जिनकी घटनाओं के लाखों लोग गवाह अपितु मैं करोड़ों कहूं तो निसन्देह अतिशयोक्ति नहीं होगी। मैं इस समय उस दावे पर बल दिए बिना रह नहीं सकता कि मेरे जीवन का वह बड़ा भाग जो बराहीन के लिखने के बाद इस समय तक पूरा हुआ वह ठीक-ठीक तीन फ़ित्नों के अन्तर्गत होकर गुज़रा है। कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि इन तीन फ़ित्नों के साथ कोई और फ़ित्नः भी था जिसे चौथा फ़ित्नः कहना चाहिए और न कोई यह दावा कर सकता है कि वे तीन फ़ित्ने नहीं हैं अपितु दो हैं। अतः तीन की संख्या में ऐसा घेरा हो गया है कि जो न कम हो सकता है और न अधिक होने योग्य है। एक अजनबी व्यक्ति भी जब मेरी जीवनी लिखने के लिए बैठेगा और मेरे जीवन के सिलसिले में तलाश करेगा कि बराहीन अहमदिया के युग से इन दिनों तक ऐसे असाधारण उपद्रव पूर्ण जोश से भरे हुए विभिन्न समुदायों की ओर से मुझ पर कितने ही हो चुके हैं जिनको फ़ित्नों की संख्या दी जानी चाहिए तो वह इस बात को समझने के लिए किसी चिन्तन का मोहताज न होगा कि ऐसे बल्वे जो फ़ित्ने की सीमा तक पहुंच गए और पूर्ण जोश के साथ प्रकटन में आए, केवल तीन थे।

प्रथम- आथम के मामले में पादरियों का आक्रमण जिन्होंने घटनाओं को छुपाकर पंजाब और हिंदुस्तान में झुठलाने का एक तूफान मचा दिया चूंकि उनके दिलों में बड़ा मुद्दा यह था कि किसी प्रकार इस्लाम के झुठलाने और अपमान का अवसर★ मिले। तो उन्होंने

★ पादरियों ने ये यत्न भी बहुत किए कि किसी प्रकार आथम नालिश करके अदालत द्वारा मुझे दण्ड दिलाए। परन्तु आथम चूंकि वास्तव में सच्चाई के रोब से मर चुका था। इसलिए उसने इस ओर ध्यान न दिया अपितु नूर अफ़्शां में साफ छपवा दिया कि पादरियों का यह बल्वः मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ। [इसी से]

आथम के जीवित रहने के समय समझ लिया कि शोर मचाने के लिए इससे उत्तम अन्य कोई अवसर न होगा। अत: सर्वप्रथम उन्होंने अमृतसर में केवल नीचता का प्रदर्शन करते हुए घटना के विरुद्ध शोर मचाया।★और गली-कूचों में आथम को साथ लेकर वह गालियां दीं कि जब से इस देश में अंग्रेजी शासन आया है इसका उदाहरण किसी समय में नहीं पाया जाता और केवल इसी पर बस नहीं था। अपितु पेशावर से लेकर बम्बई, कलकत्ता, इलाहाबाद इत्यादि में बड़े-बड़े जलसे किए और अखबारों में केवल झूठ के तौर पर घटनाएं प्रकाशित कीं और मूर्ख मौलवियों और चौपायों के समान जन सामान्य को भड़काया और हज़ारों विज्ञापन जो लानतों से भरपूर थे देश में बाटें

★ आथम के अज़ाब के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी वह बहुत ही साफ़ और खुले-खुले शब्दों में थी। उसमें यह शर्त मौजूद थी कि मृत्यु का अज़ाब उस समय उतरेगा कि जब आथम सच की और रूजू न करे। और आथम 15 महीने तक जो भविष्यवाणी की मीआद थी ऐसे विलक्षण तरीके से धार्मिक मुनाज़रे और भाषणों से अलग और चुप रहा था कि उसका चुप रहना ही उसके हार्दिक रुजू को सिद्ध करता था। फिर उसने मीआद के बाद जब यह झूठे बहाने प्रस्तुत किए कि मैं डरता तो अवश्य रहा परन्तु वह भय प्रशिक्षण प्राप्त सांप से तथा अन्य आक्रमणों से था जो मुझ पर किए गए थे। तब इस पर जब उसे कहा गया कि ये समस्त आरोप बिना सबूत और अनुचित हैं और मीआद के बाद वर्णन किए गए हैं। अब इनको या तो क़सम से सिद्ध करना चाहिए या नालिश से या किसी अन्य घरेलू तरीके से। तो उसने कोई तरीका नहीं अपनाया। अपितु क़सम पर चार हज़ार रुपए का वादा किया गया तब भी क़सम खाकर अपना बरी होना सिद्ध न कर सका। और यह समस्त आरोप अपने साथ क़ब्र में ले गया। ख़ुदा के इल्हाम में यह भी था कि यदि वह गवाही को छुपाएगा तो शीघ्र मर जाएगा। अत: वह हमारे अन्तिम विज्ञापन से सात माह के अन्दर मर गया। अब क्या इस भविष्यवाणी पर कोई अंधकार था जिससे ईसाइयों ने शोर मचाया? नहीं बल्कि उनको आथम के डरते रहने की ख़ूब ख़बर थी यहां तक कि एक बार एक बीमारी में आथम ने चीख़ मारकर कहा कि "हाय मैं पकड़ा गया।" परन्तु ईसाइयों को यही स्वीकार था कि सच्चाई पर पर्दा डालें। उन्होंने इस शोर में बड़ा अन्याय किया। इसी से

और लोगों पर यह प्रभाव डालना चाहा कि इस्लाम धर्म तुच्छ है और कुछ मौलवी, दुनिया के कुत्ते उनकी हां में हां मिलाने लगे और यह फ़ित्नः समस्त फ़ित्नों से बढ़ा हुआ था। क्योंकि इसमें केवल मुझ पर ही आक्रमण नहीं था बल्कि बड़ा उद्देश्य यह था कि इस्लाम को अपमानित और तिरस्कृत करके दिखाएं और यहूदी विशेषता रखने वाले मौलवी झुठलाने में उनके साथ सम्मिलित हो गए और कहा कि यदि ईसाई झूठलाएं तो क्या हानि है। यह व्यक्ति तो स्वयं काफ़िर है। हालांकि वे खूब जानते थे कि ईसाई इस लेखक को भी मुसलमान जानते हैं। निष्कर्ष यह कि मुसलमानों में से एक फ़िर्क़े (समुदाय) का मुखिया समझते हैं। तो इन अन्यायियों ने मुझसे शत्रुता के कारण ईसाइयों के मुंह से इस्लाम धर्म से ठट्ठे कराये बल्कि उन्हें बार-बार नालिश करने के लिए प्रेरित किया।

दूसरा फ़ित्ना: जो दूसरे स्तर पर है शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी का फ़ित्नः है। इस ज़ालिम ने भी वह फ़ित्नः खड़ा किया जिसका इस्लामी इतिहास पहले उलेमा के जीवन में कोई उदाहरण मिलना कठिन है। बदहवास नज़ीर हुसैन की कुफ्रनामः पर मुहर लगवाई। सैकड़ों मुसलमानों को क़ाफ़िर और नारकी ठहराया और बड़े ज़ोर से गवाहियां अंकित कराईं कि यह लोग कुफ्र में ईसाइयों से भी कुफ्र में अधिक बुरे हैं। समस्त रिश्ते-नाते टूट गए। भाइयों ने भाइयों को और बापों ने बेटों को और बेटों ने बापों को छोड़ दिया और फ़ित्नः का ऐसा तूफान उठा कि जैसे एक भूचाल आया। जिससे आज तक ख़ुदा के हज़ारों नेक बन्दे और इस्लाम धर्म के विद्वान, फ़ाज़िल, संयमी, क़ाफ़िर और अनश्वर नर्क के पात्र समझे जाते हैं!!!

तीसरा फ़ित्नः जो तीसरे स्तर पर है आर्यों का फ़ित्नः है जो

एक चमकदार निशान के साथ हुआ और यह फ़ित्नः इसलिए तीसरे स्तर पर है कि बड़े तीव्र बल्वे के बावजूद इसके साथ विजय का स्पष्ट निशान था। यह सच है कि इसमें हिन्दुओं का बहुत शोर और कोलाहल हुआ तथा बार-बार क़त्ल करने की धमकियां दीं और गालियों से भरे हुए पत्र भेजे। कई अख़बारों में हद से अधिक गाली-गलौज किया गया। और फिर अन्त में सरकार के द्वारा घर की तलाशी कराई गई। परन्तु इन सब बातों के बावजूद विजय-पताका हमारे हाथों में ही रहा। वह मुआहदः जो लेखराम के साथ धार्मिक परख के लिए आसमानी निशान द्वारा किया गया था। उसके अनुसार हमारे मौला करीम (ख़ुदा) ने हिन्दुओं पर हमारी डिग्री करके बड़ी सफ़ाई से हमें विजय दी और जैसा कि पहले से बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम था कि **यदि ख़ुदा ऐसा न करता,** अर्थात् ऐसा चमकदार निशान न दिखाता **तो संसार में अंधेर पड़ जाता।** ऐसा ही ख़ुदा ने अपने समस्त इरादों को पूरा किया। लेखराम क्या मरा समस्त आर्यों को मार गया। इस्लाम का बोल बाला हुआ और हिन्दू ख़ाक में मिल गए। बड़े सम्मान के साथ मैदान हमारे हाथ रहा और सिद्ध हो गया कि ख़ुदा वही ख़ुदा है जो **इस्लाम का ख़ुदा और क़ुर्आन का** उतारने वाला है। अब इसके साथ हमें गालियां दी गईं, यदि हमें क़त्ल करने के लिए डराया गया, यदि हमारे घर की तलाशी कराई तो उस खुशी की तुलना में यह समस्त ग़म कुछ चीज़ नहीं है। बल्कि इस फ़ित्नः से एक और भविष्यवाणी पूरी हुई जो अभी हम वर्णन करेंगे और लेखराम के मरने से शत्रु का मुंह काला तो हो चुका था। परन्तु हमारे घर की तलाशी ने उनके छल प्रपंचों पर और भी मिट्टी डाल दी और **झूठ की नाक बड़ी सफ़ाई से काटी गई।**

यह तीन फ़ित्ने हैं जो बराहीन अहमदिया के समय से आज तक हमारे सामने आए। और यह ऐसे खुले-खुले तौर पर हुए हैं कि मैं विश्वास रखता हूं कि हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति जो इन्सान कहलाने का अधिकार रखता है इन तीनों फ़ित्नों से भलीभांति परिचित है। अब समीक्षा योग्य बात यह है कि क्या यह तीन फ़ित्ने बराहीन अहमदिया में वर्णन किए गए हैं या नहीं। तो मैं प्रकाशमान दिन की तरह देखता हूं की यह तीनों फ़ित्ने पादरियों के फ़ित्नः से लेकर चमत्कार निशान के फ़ित्नः तक बराहीन अहमदिया में वर्णन किए गए हैं। अपितु प्रत्येक वर्णन के समय फ़ित्नः का शब्द भी मौजूद है। अतः अब एक पवित्र हृदय और पवित्र दृष्टि लेकर निम्नलिखित इबारतों को पढ़ो जो बराहीन अहमदिया से नक़ल करके मैं यहां लिखता हूं और वे ये हैं:-

पहला फ़ित्नः पृष्ठ 241 बराहीन अहमदिया-

ولن ترضی عنك اليهود ولا النصاری۔ و خرقوا له بنین و بنات بغیر علم۔ قل هو الله احد الله الصمد لم یلد ولم یولد ولم یکن له کفوا احد۔ و یمکرون و یمکر الله و الله خیر الماکرین الفتنة ھٰھنا فاصبر کما صبر اولو العزم و قل ربّ ادخلنی مدخل صدق

अर्थात् यहूदी तुझसे राज़ी नहीं होंगे। यहूदियों से अभिप्राय यहां यहूदी सिफ़त मौलवी हैं। जिनका वर्णन बराहीन अहमदिया में इससे पहले पृष्ठ में है। और फिर फ़रमाया कि ईसाई भी तुमसे राज़ी नहीं होंगे अर्थात् पादरी। और फ़रमाया कि उन्होंने मूर्खता से ख़ुदा के बेटे और बेटियां बना रखी हैं। इन पादरियों को कह दे कि ख़ुदा एक है, वह निस्पृह अस्तित्व है, न कोई उसका बेटा न वह किसी का बेटा और न कोई उसका सजातीय (यह उस मुबाहसः की ओर संकेत है

जो तसलीस और तौहीद के बारे में डॉक्टर मार्टिन क्लार्क की कोठी पर अमृतसर में भविष्यवाणी के कुछ दिन पूर्व किया गया था) और फिर फ़रमाया कि ये ईसाई तुझसे एक मक्र करेंगे और ख़ुदा भी उनसे मक्र करेगा अर्थात् पहले उन्हें दिलेर कर देगा और फिर अपमान पर अपमान पहुंचाएगा और फिर फ़रमाया ख़ुदा उत्तम मक्र करने वाला है। फिर फ़रमाया उस समय पादरियों की ओर से एक फ़ित्नः होगा और वह एक जोश पूर्ण बलवः के रूप में झुठलाएंगे। तो इस फ़ित्ने के समय सब्र कर जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ नबी सब्र करते रहे और दुआ कर कि हे ख़ुदा मेरी सच्चाई प्रकट कर। हम पहले लिख चुके हैं कि मक्र से अभिप्राय वह बारीक और गुप्त यत्न है जो शत्रु को अपमानित या अज़ाब देने के लिए प्रकटन में आता है। कभी-कभी मूर्ख शत्रु एक झूठी प्रसन्नता से संतुष्ट हो जाता है। परन्तु ख़ुदा का गुप्त यत्न जो दूसरे शब्दों में मक्र कहलाता है। उसे कहता है कि हे मूर्ख क्यों प्रसन्न होता है। देख तेरे अपमान के दिन निकट आ रहे हैं तब तेरी प्रसन्नता ग़म से परिवर्तित हो जाएगी। अतः यह पहला फ़ित्नः है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में लिखा गया और मुझ पर गुज़र चुका।

दूसरा फ़ित्नः वह है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-510 में वर्णित है और वह यह है-

و اذ یمکر بک الذی کفّر اوقد لی یا ھامان لعلی اطلع علیٰ الٰہ موسٰی و انی لاظنّہ من الکاذبین۔ تبّت یدا ابی لھب و تب ما کان لہ ان یدخل فیھا الا خائفا۔ و ما اصابک فمن اللہ الفتنۃ ھٰھنا فاصبر کما صبر اولو العزم۔ الا انھا فتنۃ من اللہ لیحب حبّا جمّا۔ حبّا من اللہ العزیز الاکرم عطاء ا غیر مجذوذ۔

अर्थात् याद कर वह समय जब एक काफ़िर कहने वाला तुझसे मक्र करेगा जो तेरे ईमान से इनकारी है और कहेगा कि हे हामान! मेरे लिए आग भड़का (अर्थात् काफिर ठहराने की आग भड़का। हामान से अभिप्राय नज़ीर हुसैन देहलवी है) मैं चाहता हूं कि मूसा के ख़ुदा पर सूचना पाऊं क्योंकि मैं सोचता हूं कि वह झूठा है। तबाह हो गया अबू लहब और उसके दोनों हाथ तबाह हो गए (जिनसे कुफ्र का फ़त्वा लिखा) उसे नहीं चाहिए था कि इस कुफ्र का फ़त्वा लगाने के कार्य में हस्तक्षेप करता।★ और जो कुछ तुझे पहुंचेगा वह ख़ुदा की ओर से है। यहां एक फ़ित्नः होगा। अतः सब्र कर जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ नबियों ने सब्र किया। याद रख कि यह फ़ित्नः ख़ुदा तआला की ओर से होगा ताकि वह तुझे हद से अधिक दोस्त रखे। देख यह कैसा पद है कि ख़ुदा किसी को दोस्त रखे। वह ख़ुदा जिसका नाम अज़ीज़ अकरम है। यह वह अनुदान है जो कभी समाप्त नहीं किया जाएगा। इस फ़ित्ने में कुफ्र का स्पष्ट शब्द मौजूद है। जिस से समझा जाता है कि यह किसी काफ़िर कहने वाले की ओर से फ़ित्नः होगा। कुफ्र पढ़ना भी वैध है जिसके यह मायने होंगे कि हमारे ईमान से इन्कारी। दोनों शब्दों की वास्तविकता एक ही है। अतः यह शब्द كَفَّر (कफ्फर) बाब तफ़ईल से है और तीनों कथित मायने की दृष्टि से अकेला भी हो सकता है। इल्हाम दोनों प्रकार से है। और बाद का यह वाक्य कि उसको नहीं चाहिए था कि इस कुफ्र के फ़त्वे में

★ फ़िरऔन से अभिप्राय मुहम्मद हुसैन है। ख़ुदा तआला की ओर से एक कश्फ़ प्रकट कर रहा है कि वह अन्ततः ईमान लाएगा परन्तु मुझे मालूम नहीं कि वह ईमान फ़िरऔन की तरह केवल इतना ही होगा कि اٰمَنْتُ بِالَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ या मुत्तक़ी (संयमी) लोगों की तरह अल्लाह ही बेहतर जानता है। इसी से

हस्तक्षेप करता। यह वाक्य इस बात की ओर संकेत है कि वह व्यक्ति प्रकांड विद्वान होने का दावा रखता होगा अर्थात् मौलवी कहलाएगा। अतः जिस प्रतिष्ठा का उसको दावा था उससे बहुत दूर था कि ऐसा पापियों जैसा कार्य करता। तो यह दूसरा फ़ित्नः है जो दूसरे स्तर पर है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510 में बहुत स्पष्ट तौर पर दर्ज है।

तीसरा फ़ित्नः चमत्कार निशान का फ़ित्नः है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 556, 557 में पूर्ण सफ़ाई से लिखा हुआ है। वह यह है:-

يَا عِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۔ ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَثُلَّةٌ مِنَ الْآخِرِينَ

अनुवाद - अर्थात् हे ईसा मैं तुझको स्वभाविक मौत दूंगा और अपनी ओर उठा लूंगा और तेरे अनुयायियों को उन लोगों पर कयामत तक प्रभुत्व प्रदान करूंगा जो तेरे इन्कारी हैं और अनुयायियों का एक वर्ग पहले होगा तथा एक वर्ग बाद में हो जाएगा। यह ख़ुदा का सन्तोषजनक कलाम हज़रत ईसा पर उस समय उतरा था जबकि वह अत्यंत घबराहट में थे और उन्हें ऐसी मृत्यु की धमकी दी गई थी जो अपराधी प्रकृति रखने वाले लोगों के लिए विशेष है अर्थात् सलीब की धमकी जो लानती मौत है और यही इल्हाम और यही वादा इस ख़ाकसार को हुआ जिससे यह समझा जाता था कि यही आज़माइश ख़ाकसार के सामने आएगी और यही अंजाम होगा। **इसी कारण इस ख़ाकसार का नाम ईसा रखा गया और वादा दिया गया कि मैं तुझे स्वाभाविक मृत्यु दूंगा और सम्मानपूर्वक उठाऊंगा।**

तात्पर्य यह कि इस इल्हाम के अन्दर यह गुप्त भविष्यवाणी है कि हज़रत ईसा की तरह इस ख़ाकसार के शत्रु भी क़त्ल करने की योजनाएं बनाएंगे। और अपराधी प्रकृति वाले की मृत्यु अर्थात् फांसी के लिए उपायों को काम में लाएंगे। परन्तु उन इरादों को पूर्ण करने में **असफल** रहेंगे। अतः **ईसा** का नाम इस ख़ाकसार पर चरितार्थ करने के लिए उस नामकरण के कारण की ओर संकेत हुआ कि इसी प्रकार से जैसा कि हज़रत ईसा उस मौत के लिए जो अपराधी प्रकृति वाले लोगों की होती है उपाय और यत्न किए गए। यहां भी ऐसा ही घटित होगा।

फिर आगे दूसरे इल्हामों में जो इसके बाद हैं जिन में स्पष्ट संकेत किया गया है कि यह कब और किस समय होगा तथा इस प्रकार के इरादे और क़त्ल की योजनाएं किस युग में होंगी और इससे पहले क्या निशानियां प्रकट होंगी और वह इल्हाम यह जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 557 में है। **"मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा अपनी क़ुदरत नुमाई (शक्ति प्रदर्शन) से तुझको उठाऊंगा। दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया पर दुनिया ने उसे क़ुबूल (स्वीकार) न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़ुबूल करेगा और बड़े ज़ोरआवर (शक्तिशाली) हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।"**

اَلْفِتْنَةُ هٰهُنَا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُوْلُوالْعَزْمِ۔ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا

इन इल्हामों में स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया कि वे क़त्ल की योजनाएं उस समय होंगी जब एक चमकदार निशान प्रकट होगा। इस कारण से इन योजनाओं का नाम अन्तिम इल्हाम में फ़ित्नः रखा और फ़रमाया कि इस जगह एक फ़ित्नः होगा। अतः दृढ़ प्रतिज्ञ नबियों

के समान सब्र चाहिए और यह भी फ़रमाया कि अन्त में वह फ़ित्न: समाप्त हो जाएगा।

यह तीन फ़ित्ने हैं जिनका बराहीन अहमदिया में वर्णन हुआ और ये तीनों प्रकट भी हो गए। चमत्कार निशान का फ़ित्न: केवल मौखिक शोर तक सीमित नहीं रहा, अपितु 8 अप्रैल 1897 ई० को हमारे घर की तलाशी भी हो गई ताकि वह भविष्यवाणी पूरी हो जो ईसा का नाम रखने में छुपी हुई थी। अब जैसा कि बराहीन अहमदिया के पढ़ने से इन तीनों फ़ित्नों की ख़बर मिलती है। ऐसा ही कोई हमारे जीवन चरित्र का वह नुस्ख़ा (प्रति) पढ़े जो बराहीन के समय से इस समय तक पूर्ण हुआ तब भी उसको मानना पड़ता है कि प्रत्यक्षत: भी तीन फ़ित्ने प्रकटन में आए। इस पड़ताल से न केवल वह भविष्यवाणी जो लेखराम के सम्बन्ध में की गई थी उन सहायक सबूतों से दृढ़ होती है अपितु आथम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी वह भी ऐसी खुल जाती है जैसा कि दिन चढ़ जाता है। अत: इन तीनों फ़ित्नों पर गहरी दृष्टि डाल कर ख़ुदा की पूर्ण क़ुदरत का पता लगता है। यह एक ऐसा मुक़ाम है कि इसे यों ही व्यर्थ बातों से टालना नहीं चाहिए। अपितु पूर्ण ध्यान से इस में विचार करना चाहिए। निस्सन्देह एक सत्याभिलाषी की पावित्र रूह और पवित्र कान्शेंस इस मुक़ाम से सूचना पाकर बहुत से पर्दों से मुक्ति पा सकती है। और निस्सन्देह इस स्थान पर स्वभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है यदि आथम और लेखराम के बारे में भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की ओर से नहीं थी अपितु कोई संयोग की बात थी, तो यह दोनों भविष्यवाणियां आज से सत्रह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में क्योंकर लिखी गईं? इस बात से कोई न्यायकर्ता कहां और किधर भाग सकता है कि जिस प्रकार बाह्य घटनाओं से तीन फ़ित्नों

का निशान मिलता है। इसी प्रकार ही बराहीन अहमदिया भी इन तीनों फ़ित्नों की ख़बर देती है।

अब क्या ये गवाहियां बहुत से प्रसंगों के साथ मज़्बूत होकर इस स्तर तक नहीं पहुंच गईं जिस को ठोस एवं निश्चित कहते हैं? और क्या यह सत्रह वर्ष का इल्हामों का लम्बा सिलसिला जो हमारे युग से उस असंबंधित युग तक जा पुहंचता है जहां योजना बनाने की कलम पूर्णतया टूट जाती है पूर्ण संतुष्टि पाने के लिए पर्याप्त नहीं है? क्या अब भी कोई सन्देह शेष है जिस पर कोई वहमी स्वभाव का आदमी ज़ोर दे सकता है? और यह कहना कि लेखराम मीआद के पांचवे वर्ष में मरा छठे वर्ष में नहीं मरा। क्या इस आरोप से अधिक कोई अन्य मूर्खता भी होगी? ऐसे आरोप लगाने वाले ने कहां से और किस से सुन लिया कि इल्हाम में छठे वर्ष में मरना आवश्यक शर्त थी। यह इल्हाम तो स्पष्ट शब्दों में बता रहा है कि ख़ुदा तआला ने मौत के विशेष समय को गुप्त रखकर छः वर्ष के समय का निशान दे दिया था कि इस अवधि में जिस समय ख़ुदा का इरादा होगा लेखराम को मार दिया जाएगा। क्या ख़ुदा पर यह निषेध है कि कोई बात अपने हित से गुप्त रखे और बात प्रकट करे। ऐसे व्यर्थ आरोप केवल उस मूर्ख के मुंह से निकल सकते हैं जिसे ख़ुदाई भविष्यवाणियों की फ़िलासफ़ी का ज्ञान नहीं। असल बात यह है कि संसार में नबियों के माध्यम से जितनी भविष्यवाणियां प्रकटन में आई हैं उनमें यह अभीष्ट रहा है कि भविष्यवाणी के प्रकट होने के समय को किसी हद तक गुप्त भी रखा जाए तो प्रायः ख़ुदा की सुन्नत इस प्रकार से है कि एक बात के होने के लिए एक सीमा निर्धारित कर दी जाती है। आगे ख़ुदा का अधिकार है चाहे तो उस सीमा के प्रथम भाग में ही उस बात को पूरा कर दे और चाहे तो अन्तिम भाग में पूरा

करे और चाहे कोई सीमा न लगाए तथा कोई मीआद वर्णन न करे। ख़ुदा की किताबों में सैकड़ों ऐसी भविष्यवाणियां पाओगे जिनके प्रकट होने का कोई समय नहीं बताया गया। यह अत्यंत साफ़ बात है कि यदि ख़ुदा तआला एक वादा करे कि इस समय तक एक कार्य जिस समय चाहूंगा कर दूंगा तो क्या मनुष्य उस पर ऐतराज़ कर सकता है कि एक विशेष समय क्यों नहीं बताया? हां यदि ख़ुदा तआला एक मीआद निर्धारित करके साफ़ शब्दों में यह कहे कि जब तक यह कुल मीआद गुज़र न जाए और उसका अन्तिम मिनट या अन्तिम सेकण्ड न पहुंचे तब तक यह भविष्यवाणी प्रकटन में नहीं आएगी। तो इस स्थिति में आवश्यक होगा कि इस मीआद के अन्तिम सेकण्ड में भविष्यवाणी का प्रकटन हो। किंतु जब ख़ुदा अपने हित से एक मीआद निर्धारित करके यह प्रकट करे कि उस मीआद के अन्दर-अन्दर जिस भाग में मैं चाहूंगा अमुक कलाम करूंगा। तो ऐसी भविष्यवाणी पर ऐतराज़ करना ख़ुदा तआला के सम्पूर्ण कारखाने पर ऐतराज़ है और लेखराम से संबंधित भविष्यवाणी में एक यह बड़ी प्रतिष्ठा है कि उसमें मीआद केवल छ: वर्ष की नहीं बताई गई अपितु यह भी तो बताया गया था कि वह ऐसे दिन में अपने दण्ड को पहुंचेगा जो ईद के दिन से मिला हुआ होगा।

अत: लेखराम का नाम सामरी का बछड़ा इसलिए रखा गया कि बछड़ा ईद के दिन जलाया गया था और स्पष्ट इल्हाम में भी ईद का दिन आ गया था। और ऐसी प्रसिद्धि पा गया कि सैकड़ों हिन्दुओं में वह इल्हाम प्रसिद्ध हो गया तथा इल्हाम और कश्फ़ ने साफ़ शब्दों में यह भी बता दिया कि वह भयंकर मौत होगी और क़त्ल के द्वारा होगी और कश्फ़ ने इस ओर भी संकेत किया कि मृत्यु का दिन रविवार और रात का समय होगा।

अब देखो इस भविष्यवाणी में कितनी उच्च कोटि की ग़ैब की बातें भरी हुई हैं। अब क्या यह सही नहीं कि यदि उन समस्त मामलों को पूर्णरूपेण इकट्ठी नज़र से देखा जाए और बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी को भी साथ मिलाया जाए तो निस्सन्देह यह आवश्यक परिणाम निकलता है कि यह भविष्यवाणियां विलक्षण और मानव शक्तियों से सर्वथा श्रेष्ठ हैं। हां यदि किसी मनुष्य को यह शक्ति प्राप्त है कि ऐसा सूक्ष्म से सूक्ष्म ग़ैब वर्णन कर सके और उन मामलों की सत्रह वर्ष पूर्व सूचना दे जो वर्णन करने के युग में न होने के समान हों। तो ऐसे मनुष्य को उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करना चाहिए और उसकी घटनाओं को जांच-पड़ताल के तौर पर दिखलाना चाहिए और केवल पुराने कीड़ों के खाए हुए किस्से यहां काम नहीं आएंगे।

نداریم اے یار با نَسِیَہ کار
اگر قدرتت ہست نقدے بیار

आप सुन चुके हैं कि बराहीन अहमदिया में स्पष्ट तौर पर भविष्यवाणियां दिखाई गई हैं तो यह क्रमबद्ध गवाहियां कैसे टूट जाएंगी।

चूंकि कुछ ज़ालिम मौलवी जैसा कि मुहम्मद हुसैन बटालवी★

★ इस सच्चाई के शत्रु शेख़ का ये भी मुझ पर इफ़्तिरा है कि और भी कुछ भविष्यवाणियां झूठी निकलीं। हम इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत हम कथित शेख़ को प्रति भविष्यवाणी सौ रुपया नक़द देने को तैयार हैं। यदि वह सिद्ध कर सके कि अमुक भविष्यवाणी घटना के विरुद्ध प्रकटन में आई। परन्तु क्या वह यह बात सुनकर जांच-पड़ताल के लिए निवेदन करेगा? नहीं उसको अहंकार ने अंधा कर दिया। मुझे मालूम हुआ है कि यह व्यक्ति अत्यन्त उपद्रवी और सच का शत्रु है। इसे इस्लाम से विशेष शत्रुता है। इसका दिल नहीं चाहता कि इस आपत्तियों से भरे युग में इस्लाम का सम्मान, वैभव और महानता प्रकट हो। परन्तु यह इस इरादे में असफल रहेगा। मेरी बात सुन रखो! अब से खूब स्मरण रखो कि ख़ुदा बहुत से निशान दिखाएगा। नहीं छोड़ेगा जब तक ऐसे लोगों को अपमानित करके न दिखाए। इसी से

मेरी शत्रुता के लिए इस्लाम पर आक्रमण करना चाहते हैं और वह निशान जो इस धर्म की सच्चाई पर गवाही देने के लिए आकाश से उतरे हैं उनको मिटा देना इनका अभीष्ट है। इसलिए यह **इस्तिफ्ता** क़ौम के प्रतिष्ठित समीक्षकों की सेवा में प्रस्तुत किया जाता है। हमने समस्त घटनाएं और गवाहियां सही-सही लिख दी हैं। और पुस्तकें जिन से लिखी गई हैं दीर्घ समय से प्रकाशित हैं। प्रत्येक प्रतिष्ठित बुद्धिमान यदि असल पुस्तकों को देखना चाहे तो हमसे मांग सकता है इसलिए हम प्रतिष्ठित बुद्धिमान साहिबों की सेवा में निवेदन करते हैं कि वे अल्लाह तआला और उसके रसूल की प्रतिष्ठा एवं सम्मान के लिए इस फ़त्वे को जो वर्तमान वृत्तान्त से पैदा होता है कि इस पुस्तक से संलग्न काग़ज़ों पर लिख कर और उन पर अपनी तथा दूसरों की गवाही अंकित करके भूले-भटके लोगों पर उपकार करें और ऐसे लेख पत्र द्वारा हमारे पास भेज दें कि वे सब संग्रह के तौर पर छाप दिए जाएंगे। मैं जानता हूं कि इस बारे में प्रतिष्ठित बुद्धिमानों की गवाहियां बड़े जोश के साथ हर ओर से आएंगी और सच्चे ईमानदार इस गवाही को जिससे इस्लाम की शान प्रकट होती है कभी गुप्त नहीं रखेंगे परन्तु नीच स्वभाव, भ्रष्ट विचार, संसार के पुजारी ऐसे लोग स्मरण रखें कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि जो सच्ची गवाही को छुपाएगा उसका हृदय ख़ुदा का पापी है। जहां तक मैं देखता हूं सरकारी पदाधिकारियों को भी कोई कानून ऐसी सच्ची गवाही से नहीं रोकता जिसमें वैध तौर पर सच्चाई की सहायता हो। मनुष्य में सच्चाई की सहायता बड़ी उत्तम विशेषता है। हम संसार का कैसा ही सम्मान और प्रतिष्ठा पाएं ख़ुदा के पंजे से बाहर नहीं जा सकते। मेरा अनुभव है उस शक्तिशाली हाकिम का पास न रखना और सच्ची गवाही को

छुपाना अपने लिए अपमान की मार ख़रीदना है। जो व्यक्ति ऐसे साफ़-साफ़ वृत्तान्त को देख कर फिर सच्ची गवाही से बचेगा उसके बारे में हमें कम से कम यह विश्वास रखना पड़ेगा कि यह व्यक्ति ख़ुदा, धर्म और मान्य रसूल की सहायता, सम्मान से लापरवाह है, परन्तु यदि सच्ची गवाही देगा तो हम समस्त हाकिमों के हाकिम ख़ुदा के आगे उसके धर्म और संसार की मनोकामनाओं के लिए दुआ करेंगे और हम क्या मांगते हैं केवल सच्ची गवाही।

مبادا دل آں فرو مایہ شاد
کہ از بہر دنیا دہد دین بباد

मेरा इरादा है कि इन बातों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करा कर यूरोप के बुद्धिमानों के सामने भी प्रस्तुत करूं। क्योंकि उनमें सच्चाई की सहायता के लिए बड़ा साहस पाया जाता है। बशर्ते कि एक सच्चाई का वास्तव में सच्चा होना समझ लें परन्तु सर्वप्रथम मैं अपने क़ौमी भाइयों के सामने यह अपील प्रस्तुत करता हूं और उनको इस मर्दाना गवाही के अदा करने का अवसर देता हूं जिससे संसार के अन्त तक सम्मान पूर्वक नेक लोगों की सूची में उनका नाम दर्ज रहेगा।

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

12 मई 1897 ई०

क्रम संख्या	लेख राम के निशान से संबंधित सत्यापन कर्ता का नाम	निवास स्थान, पूरा पता, ज़िला	सत्यापन की इबारत

क्रम संख्या	लेख राम के निशान से संबंधित सत्यापन कर्ता का नाम	निवास स्थान, पूरा पता, ज़िला	सत्यापन की इबारत